व्यवस्थाविवरण

परिचय

व्यवस्थाविवरण को पढ़ना हमारे लिये इतना महत्वपूर्ण क्यों है?
क्या ये सभी के पढ़ने के लिये है, जवान और बूढ़े, स्त्री और पुरुष?
यदि यह परमेश्वर का वचन है, तो क्या हम सभी इसकी वाचा के नियमों से बन्धे हैं?
हम इससे क्या सीख सकते हैं, यह नए नियम के सुसमाचार से कैसे जुड़ा है, और अधिक महत्वपूर्ण बात यह कि यीशु मसीह के द्वारा यह सब पूरा कैसे हुआ?

हमारी यह आशा है कि, जैसे हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक को पढ़ने के इस सफर में निकलेंगे, तो हममें से हरएक अपने व्यक्तिगत विश्वास में बढ़ेगा और उन प्रश्नों के उत्तर भी मिलेंगे जो मसीहियों और गैर मसीहियों के विश्वास में समान रुप से रोड़ा बनते हैं।

एक शुरूआत के लिये, आओ हम कल्पना करें:

पाँच वर्ष की उम्र में, एक ही रात में आपके अनेक मिस्त्रि पुरूष मित्र मर गए, उन्हें आप याद कर रहे हैं। जल्दि-जल्दि एक भेड़ या बकरी का मांस खाने के २४ घंटे के अन्दर ईस्त्राएल के अन्य कई परीवारों के साथ, आपको भी गोशेन में अपने खुद के घर को ज़बरदस्ती छोड़ना पड़ा, जहाँ फिर कभी लौटकर ना आ पाएंगे।

आपने उस बूढ़े व्यक्ति को जो आपके लोगों की अगुवाई कर रहा है, अपने हाथ में की लाठी को ऊँचा उठाते हुए देखा, आपने याम सुफ (लाल समुद्र) को दो भागों में बंटते हुए देखा और उस समुद्रतल के बीचों बीच सूखी भूमि पर चलकर आपने समुद्र को पार किया। समुद्र को पार करने के बाद मिस्त्रि सेनाओं के रथों की गढ़गढ़ाहट को आपने डरावनी चिल्लाहट में बदलते सुना और फिर कुछ समय बाद जब समुद्र फिर से अपने स्थान में लौट आया तो सबकुछ पहले की तरह शान्त हो गया।

एक महीना गर्म सूखे रेगिस्तान में बिना पेटभर खाए चलते रहने के बाद, आपने रोकर अपने माँ-बाप से पूछा, गोशेन में ही रहकर हम वहीं खाते पिते क्यों न रहे। कभी-कभी पानी या तो दूषित होता या फिर पानी ही नहीं मिलता। इन सभी समस्याओं के बावजूद आपने उस बूढ़े व्यक्ति को अपने हाथ की लाठी से कई आश्चर्यजनक चमत्कार परमेश्वर की मदद से करते देखे।

१५०० से अधिक मिस्त्री देवताओं और मिस्त्री जादूगरों के जादू टोने के बावजूद, किसी ने अब तक यह नहीं सुना था कि चट्टान पर लाठी मारने से उसमें से पानी निकला, या फिर आसमान से रोटी बरसने लगी।

कुछ सप्ताह बाद, बीस से तीस लाख लोगों के साथ आप उस विशाल पर्बत के नीचे खड़े हो जिसे आपके माता-पिता होरेब कहते हैं। वहाँ पहाड़ पर आपने बीजली चमकते और धुंआ निकलते देखा, और जब मूसा को परमेश्वर के नियम मिले तो आपने गढ़गढ़ाहट सुनी। छोटी उम्र से ही तुम्हें खुद को परमेश्वर के नियम और विधियां (व्य.वि. ६:४-५)सिखाई गईं; मिस्त्र से बिलकुल अलग जहाँ आप अनेक प्रकार के स्वभाव और स्थानिय देवताओं के बारे में सीख रहे थे।

सात वर्ष की आयु में, आपने देखा कि फिर से आपके माता-पिता उन सारे लोगों के साथ सहमत और सहभागी होने के लिये तैयार हैं जो वापस मिस्र को लौटना चाहते हैं। उन्होंने परमेश्वर, मूसा, कालेब और यहोशू के विरुध्द विद्रोह किया।

आपने देखा कि, आपके चचेरे भाई-बहनों, मौसीओं और मौसाओं का महामारी के कारण मारे गए या फिर भूमि ने उन्हें निगल लिया, क्योंकि वे कुड़कुड़ा रहे थे और विद्रोह कर रहे थे।

३८ वर्षों के बाद आपने अपने कई मित्र जो ४० वर्ष के हो चुके थे मरते देखा क्योंकि वे स्थानिय देवी-देवताओं और मूर्तियों की पूजा करने लगे थे और पूजा के एक विधी के रूप में व्यभिचार के पाप में सहभागी हो रहे थे।

यह उन बच्चों, किशोरों और १५ वर्ष के ऊपर के लोगों की पीढ़ी थी जो रेगिस्तान में पले बढ़े जिनसे मूसा व्यवस्थाविवरण की बात करता है।

आईये हम इस बात में इमानदार रहें, यदि बढ़े होते समय हमने इस प्रकार की परिस्थितीयों का अनुभव लिया हो तो,

आपकी भावनाएं और आपका स्वभाव कैसा होगा?
क्या रेगिस्तान के घोर कष्टदायी जीवन के कारण परमेश्वर के द्वारा दिये जानेवाले वाचा की भूमि का सपना बदल जाएगा?
परमेश्वर के बारे में आपके विचार कैसे होंगे? क्या आप परमेश्वर के कठोर न्याय को बड़ी आसानी से देखेंगे या उनके अनुग्रह को?

व्यवस्थाविवरण के विषय

पहली नज़र में शायद हमें ऐसा महसूस हो कि परमेश्वर कठोर और बदला लेने वाला परमेश्वर है। परन्तु यह किताब लगातार परमेश्वर के अनेक अलग-अलग गुणों को उजागर करता है- **छुटकारा, प्रेम, अनुग्रह, सामर्थ, अपक्षपात और न्याय।**

वास्तव में, व्यवस्थाविवरण परमेश्वर पर केंन्द्रित है; यह **परमेश्वर को इस्राएल का एक पराक्रमी योध्दा** बताता है, जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती (२:२२-२४; ४-३४-३५)।

परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को गुलामी से छुड़ाने का चुनाव किया और अपने प्रेम के कारण उन्हें और उनके पूर्वजों को एक ऐसा उत्तराधिकार देना चाहा जिसके वो लायक न थे (४:३७-३८; ६:१०-१२; ७:७-८); परमेश्वर ही पहले अपने लोगों से रिश्ता बनाने की पहल करते हैं और उनके पूरे सफर में उन्हें अपने अनुग्रह का दान देते रहते हैं।

बदले में परमेश्वर की मांग क्या थी?

विषय दोहरे हैं:

पहला विषय परमेश्वर के गुणों से सम्बन्धित है, जिनमें से कुछ का वर्णन ऊपर किया गया है, और दूसरा विषय परमेश्वर के लोगों से सम्बन्धित है।

एक वाचा के द्वारा परमेश्वर अपने लोगों से रिश्ता चाहते थे, जिसका उद्देश्य था कि इस्राएली "एक" सच्चे परमेश्वर को मानें और उनकी आज्ञाओं का पालन कर उनसे प्रेम करें। आज्ञापालन से परमेश्वर को नहीं लेकिन उन लोगों को फायदा था(४:३९, ५:२९; ६:१-५)।

उनके लोगों को चुना गया था कि वो भी परमेश्वर की तरह पवित्र बनें (लै.व्य. ११:४४-४५; व्य.वि.७:६); उस समय के प्रचलित संसकृती में उन्हें ढलना नहीं था।

व्यवस्थाविवरण "तोहरा" का एक भाग होने के कारण एक कानून था जिसके द्वारा एक राज्य का शासन चलाना था जिसका उच्च शासक परमेश्वर हो। शास्त्रिय मसीहियत जहाँ कलीसिया और राज्य अलग हैं इसके बिलकुल विपरीत, इस्राएल ने सारे राष्ट्र और सभा (कलीसिया) को एकजुट किया। एक बात साफ हो जानी चाहिये कि हालांकि व्यवस्थाविवरण हमारे लिये परमेश्वर का वचन है, लेकिन यह हमारे लिये वाचा या नियम **नहीं** है, फिर भी पुराने आचार और नैतिकता के सिद्धान्त जो आत्मा हमें दिखाता है उनसे हम सीख सकते हैं (१कुरू.१०:६-११; रोमियों १५:४)।

"व्यवस्थाविवरण" का अर्थ क्या है?

अंग्रजी में इस पुस्तक का नाम युनानी भाषा से लिया गया है जिसका वास्तविक अर्थ है "**दूसरा नियम**"। दुर्भाग्य की बात यह है कि जब इब्रानी पुस्तक का अनुवाद युनानी में किया गया (पुराना नियम-युनानियों के लिये ई.पू.२५० में), जिसका हवाला व्य.वि. १७:१८ में है "व्यवस्था की पुस्तक" (जो किसी भी इस्त्राएली राजा को पढ़ने और पालन करने के लिये बनाना था) इसका गलत अनुवाद "दूसरा नियम" किया गया। परन्तु यह **न तो** दूसरा नियम था और **ना ही** दूसरी आवृत्ती, जिसका हवाला दिया गया उस मूल वाचा के नियम की एक नकल थी। सीनै पर्वत पर की वाचा जिन वयस्कों को मिली थी उन सभी की रेगिस्तान में इन ४० वर्षों में मृत्यु हो चुकी थी, केवल **कालेब और यहोशू** जीवित थे। इन ४० वर्षों के गुज़रने के बाद व्यवस्थाविवरण परमेश्वर की वाचा का विवरण नये रूप में उन बच्चों के साथ करता है जो उस समय सीनै पर्वत पर थे और वे बच्चे जो इस सफर के बीच पैदा हुए और अब बड़े हो चुके हैं और कुछ ही समय में कनान देश में प्रवेश करने वाले हैं। दूसरे शब्दों में, इस अगली पीढ़ी के लिये यह नियम उन्हें दुबारा दिया जा रहा था या फिर से दोहराया जा रहा था। वाचा का केन्द्र, याने दस आज्ञाएं, प्रबल किये गए, लेकिन व्यवस्थाविवरण तक पहूँचने तक इस्राएल के इतिहास में कई महत्वपूर्ण घटनाएं घटी, और व्यवस्थाविवरण में अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बातों का वर्णन है, और साथ ही साथ वर्तमान और भविष्य का यथार्त चित्रण है, जिसके बारे में बाद में चर्चा करेंगे। क्योंकि मूसा कनान में प्रवेश नहीं करने वाला था और पहली पीढ़ी मर चुकी थी, नई पीढ़ी को आगे आने वाले स्थीती परीवर्तन के लिये तैयार रहना था।

जब आप उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था और गिनती जैसे नामों को सुनते हो तो क्या सोचते हो?

अंग्रेजी में यह शीर्षक पुस्तक के केन्द्र विषय को सूचित करते हैं: परमेश्वर द्वारा सृष्टि की रचना (उत्पत्ति); इस्राएलियों का मिस्र से निकलना (निर्गमन); पवित्रता के लिये याजकिय कार्य (लैव्यव्यवस्था); और वाचा की भूमि में प्रवेश करने के लिये जनगणना (गिनती)। यदि आप इब्री तोराह (पु.नियम) पढ़ रहे हैं तो यह शीर्षक होंगे: बेरेशीथ –आदि में (समय, आकाश और किसी भी वस्तु से पहले परमेश्वर का अस्तीत्व है); विलेह शेमोत – यह नाम हैं (इस्त्राएल के वंशज); वाईक्रा – और उसने पुकारा (प्रभु ने मूसा को पुकारा); और बेमितबार – जंगल/रेगिस्तान में (वाचा की भूमि तक की जीवन यात्रा)। व्यवस्थाविवरण में लोगों के लिये इन शब्दों का सम्बन्ध मूसा से था (व्य.वि.१:१) परमेश्वर की आत्मा के मार्ग दर्शन में (ज्यादा विवरण बाद में दिया जाएगा)।

ज़रूरतें क्या थीं?

हालांकि इस पीढ़ी ने परमेश्वर के सामर्थ के द्वारा, दो मूर्ती पूजक राजाओं को हराकर यर्दन नदी के पूर्व में स्थित उनके राज्यों पर अपना अधिकार जमा लिया था, फिर भी उनको प्रोत्साहन की आवश्वक्ता थी। हो सकता है कि उनके अविश्वासी पूर्वजों का डर और उनकी असफलताएं अब भी उनका पीछा कर रहे थे; हो सकता है कि नई जगह पर कठिनाईयों का डर उन्हें सता रहा था। हो सकता है कि परमेश्वर की अपेक्षाओं पर खरे न उतरने की शंका उन्हें खाए जा रही थी।

इस पीढ़ी ने अपने माता–पिता और दादा दादियों का नाश होते देखा था क्योंकि प्रभु के प्रती वो विश्वासी न थे। उनको पुन: इस बात का आश्वासन चाहिये था कि उनकी वफादारी के बदले आज भी परमेश्वर का प्रेम अपने अनन्त वाचा के साथ उनके लिये वैसे ही स्थिर था। वो परमेश्वर को अपने नायक, अपना छुड़ानेवाला, ज़रूरतें पूरी करनेवाला और रक्षक के रुप में देखना चाहते थे। ख़तरा इस बात से था कि कनान देश में लम्बे समय तक रहने के बाद लोग बड़ी आसानी से परमेश्वर को भूल सकते थे। खेती के बढ़ते काम, परीवार का बढ़ना और बढ़ते धन और समृद्धि के साथ जीवन इतना व्यस्त हो सकता था कि लोग परमेश्वर को कलंकित कर स्थानीय देवताओं को अपनाते और इसका असर यह होता कि वे सिर्फ अपने वैयक्तिक/पारिवारिक ज़रूरतों का ही ध्यान रखते।

परमेश्वर एक अलग किये हुए निज(खुदके) लोग अपने लिये चाहता था। परमेश्वर की पवित्रता चाहती थी के उसके लोग भी पवित्र हों। धार्मिक पवित्रता बनी रहने के लिये वाचा की मांग थी कि उन कनान वासियों को उनके देश से निकाला जाए जिनकी जगह इस्त्राएली लेने जा रहे थे। वास्तविक रूप में उन राष्ट्रों के लिये यह एक न्यायिक ईश्वरीय भविष्यवाणी होने जा रहा था जो राष्ट्र सदियों से घृणित धर्म और घृणित सांसकृती को अपने दिलों में संजोए हुए थे(उत्पत्ति १५:१६)। दूसरा परमावश्यक कारण था कि एक सच्चे परमेश्वर में इस्त्राएलियों के विश्वास को सुरक्षित किया जाए ताकि स्थानिय धर्म और देवताओं का प्रभाव उन पर न पड़े।

इस श्रृंखला का उपयोग कैसे करें?

यदि परिचय को एक ही बार में पढ़ना और समझ पाना कुछ ज़्यादा था तो चिन्ता ना करें हर अध्याय को पढ़ने के बाद फिर से आप इसे टटोल सकते हैं। इस पुस्तक के हर अध्याय को उसी दिन पढ़कर समाप्त करने और दिए गए दिन और तारीख के साथ बने रहने की जल्दबाज़ी ना करें, जो संदर्भ दिए गए हैं उनको पढ़कर इस पर विचार किजीये; कठिन अनुछेदों को और गहराई से जानने का प्रयत्न करो, हो सके तो एक से ज़्यादा बायबल के अनुवादों को जांचो। प्रत्येक अध्याय के केन्द्रीय/मुख्य विषय को जानने का प्रयत्न करो बजाए इसके कि एक ही आज्ञा के अनेक शब्दों के खेल पर ध्यान केंद्रित कर, यह कहो कि हम इन बातों को जानने का प्रयत्न नहीं कर पाएंगे।

शुरुआत करने में आपकी मदद करने के लिये वचनों के प्रत्येक भाग के लिये, हमने कुछ व्याख्या और/या प्रश्न दिये हैं, और साथ ही कुछ विस्तारपूर्वक ब्योरा दिया है ताकि जब समय हो तो इन लेखों का आप और गहराई से शोध कर सको। हमने सप्ताह के हर एक दिन के लिये अध्ययन तैयार किया है, सिर्फ रविवार को छोड़के ताकि उस दिन आप दूसरा कुछ पढ़ सको या फिर छूटे हुए अध्यायों को पढ़कर समय के साथ बने रह सको। तारीख सिर्फ एक सुझाव है; अपने काबिलियत के हिसाब से आप इसे पढ़ सकते हैं।

यदि हमेशा पवित्र शास्त्र के अनुछेद को आप पहले पढ़ें तो अच्छा होगा–क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है यह पुस्तक नहीं! और जो भी विचार या प्रश्न आपके मन में उठता है उसे लिखो। फिर इस अनुछेद के प्रश्नों और व्याख्या को देखो। यदि आपके किसी प्रश्न का उत्तर यहाँ आपको नहीं मिल रहा हो तो अध्याय के बाद आप किसी भाई (रमेश, जॉन, मार्क, राजी, या डेविड) से इसका उत्तर पूछ सकते हैं या आपकी कोई टिप्पणी(कमेन्ट), समीक्षा और प्रश्न हैं तो आप ईमेल द्वारा भी पूछ सकते हैं। (cocmumbai@rediffmail.com)

ROUTE OF THE EXODUS OF THE ISRAELITES FROM EGYPT

व्य.वि. १:१–५ 'इस्राएल को मूसा का पहला उपदेश' मंगलवार १ जनवरी

कुछ समय निकालकर नक्शे (३२) को ऊपर और नीचे देखो। भूगोल की जानकारी आपको जगहों के नाम ढूँढने में मददगार होगी, और विषेश रुप से इस्राएल के श्रोतागण (सुनने वाले लोग) कहाँ बैठे हैं इस बात को समझने में आपकी मदद होगी।

यह पाँच वचन आनेवाले उस उपदेश के लिये मंच तैयार करते हैं जो निर्जन प्रदेश में बिताए इस्राएल के ४० वर्षों को फिर से दोहराता है। ग्यारह महीने सीनै/होरेब पर्वत के पास बिताने, प्रभु के निवासस्थान का काम पूरा करने के बाद, यह पहली पीढ़ी पारान नामक निर्जन प्रदेश के लिये निकल पड़े और कादेश बर्निया में बस गए (निर्ग. १९:१, गिन.१०:११–१२, १३:२६)। सीनै से कादेश का ग्यारह दिन का पैदल सफर करीब ११० से १२० मील का था। ग्यारहवां महीना 'शेबात' शायद एक ठंडे बारीश के दिनों के बीच रहा होगा (जनवरी/फरवरी)।

मोआब के मैदानों में जो पिसगाह पर्वत से ज़्यादा दूर नहीं था, मूसा इस पीढ़ी को इस्राएल की कहानी फिर से सुना रहा था। आपको क्या लगता है क्यों प्रभु चाहते थे कि इस दूसरी पीढ़ी को मूसा ये सारी घटनाएं और नियम बताए, जबकि थोड़े समय पहले ही यर्दन नदी के पूर्वी भाग के दो अमोरी राजाओं पर इन्होंने विजय पाई थी?

व्य.वि. १:६–४६ 'निर्गमन के बाद इस्राएल का इतिहास' बुधवार २ जनवरी

मूसा इस्राएल के प्रति अपना ऐतिहासिक समालोचन बिते हुए ४० वर्षों से आरम्भ करता है जब प्रभु ने सीनै/होरेब पर्वत पर अपने लोगों से वाचा बान्धा था; यह मिस्र छोड़ने के दो महीने बाद हुआ था(निर्ग.१९–२३)। वास्तव में वहाँ उन्होंने पूरा एक वर्ष बिताया, एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाया जानेवाला परमेश्वर का निवासस्थान बनाते हुए और नई विधियां सीखते हुए, क्या खाना है क्या नहीं ये सीखा, पवित्रता और संक्रामक रोगग्रस्त व्यक्ति को अलग रखने के कानून (लै.व्य.), ताकि जन–समुदाय परमेश्वर के लिये पवित्र बना रहे। परमेश्वर ने जनगणना की मांग की ताकि आनेवाले युध्द के लिये सैनिकों की गिनती हो सके (गिन.१)। दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में(गिन. १०:११–१२) परमेश्वर ने उन्हें सीनै को छोड़ने और वाचा की भूमि पर अपनी आंखे लगाने को कहा। मूसा के ससूर के सलाहानुसार मूसा का बोझ कम करने के लिये सरकारी अधिकारी या न्यायाधिश नियुक्त किये गए जो छोटे मोटे झगड़े और न्यायालयीन विवादों पर निर्णय देते थे (निर्ग.१८)। राष्ट्र इतना बढ़ गया था कि उसे अकेले संभालना मूसा के लिये कठीन हो गया था। उनका पहला खास पड़ाव कादेश बर्निया था। जैसा पहले बताया गया कि पुरूषों, स्त्रियों, बच्चों और दूसरे पालतू जानवरों के साथ पैदल यह यात्रा करने में ग्यारह दिन लगे और दूरी १२० मील से अधिक थी। एक रेगिस्तानी क्षेत्र (सीनै) से दूसरे रेगिस्तानी क्षेत्र (पारान) तक की यात्रा उन्होंने की।

कादेश बर्निया(आज का इन–अल–कुदैरत–नक्शा ३२ देखें) अमोरी राज्य के दक्षिणी सीमा में बसा था, जो अमालेकि उपनिवेशियों से ज़्यादा दूर नहीं था। यही वो जगह थी जहाँ से मूसा ने

इस्राएलियों को पूर्वी दिशा की ओर बढ़ते हुए कनान देश में प्रवेश करने का आदेश दिया। शायद पूरा राष्ट्र अब भी आशंकित था कि इस भूमि पर आक्रमण करें या ना करें, और इसके फलस्वरूप उन्होंने मूसा से निवेदन किया कि वह एक छोटा प्रतिनिधि मण्डल पहले उस राज्य में भेजकर वहाँ के भेद पता करवाए। यह योजना परमेश्वर द्वारा दी गई थी (गिन.१३)।

उस भूमि की जासूसी करना याने क्या करना था? गिनती १३ के अनुसार दक्षिणी छोर की सीमा (सीन नामक निर्जन प्रदेश) से उत्तरी छोर (रेहोब) तक की सीमा में उन्होंने ४० दिनों तक जासूसी की। यह शायद गर्म/खुष्क मौसम रहा होगा क्योंकि अंगूर की कटाई का समय शुरू हो गया था (मध्य से जुलाई महीने के अन्त तक)।

यह यात्रा इस नक्शे में दिखाया गया है।

हालांकि २०० मील पैदल चलकर गुप्तचरी की गई थी, लेकिन मूसा का पूरा ध्यान एशकोल (अर्थात "गुच्छा") नामक नाले के पास जहाँ अगूंर की कटाई हो रही थी वहाँ जासूसों ने जो अनुभव किया उस पर टिका था। यह किलों से सुरक्षित एक पुराने विख्यात शहर हेब्रोन के पास था, जहाँ अब्राहम बंजारों की तरह छावनी डालकर रहता था (उत्प.१३:१८)। कल्पना करो कि महाराष्ट्र के सारे शहरों में बस, कार, मोटरसाईकल, हवाई जहाज या रेलगाड़ी के बिना घूमकर ४० दिनों तक गुप्तचरी की जाए।

"नकारात्मक" सच्चाईयाँ क्या थीं जिनका प्रभाव लोगों के विश्वास पर पड़ा?

एक बुरे समाचार ने पूरे इस्राएल में विश्वास के कमी को फैला दिया, जिसका नतीजा यह हुआ कि लोगों को परमेश्वर दुश्मन सा दिखने लगा, जिसका इरादा इस्राएलियों को यह काम सौंपकर उनका विनाश करना था। यदि परमेश्वर आपसे यह कहें कि महाराष्ट्र के जिस शहर में आप रहते हैं उसे छोड़कर अपने सारे परीवार को लेकर एक ऐसे शहर में जाकर रहो जहाँ की आबादी ९८% मुसलमानों की है और वहाँ शरीया कानून लागू है, और वहाँ के सभी लोगों को मसीही बनाना तुम्हारा काम है, तो आपकी स्वभाविक प्रतिक्रिया क्या होगी? इस्राएली जो पाना चाहते थे जब उसे पा गए तब उन्हें अपने परीवारों के सुरक्षा की चिन्ता होने लगी क्योंकि वह जगह खतरनाक थी। मिस्र की वह भूमि जहाँ पर वो गुलाम थे और जीवन बड़ा कठीन था जहाँ से परमेश्वर उन्हे छुड़ाकर लाए थे, अब कनान देश की तुलना में वो उन्हें स्वर्ग सा जान पड़ रहा था (गिन.१४:१-४)।

यीशु ने हमें आत्मिक रुप से मिस्र से छुड़ाया है; हमें पाप की गुलामी से आज़ाद किया। बावजूद इसके जब हमारे मसीही जीवन के रेगिस्तान में हम परिक्षाओं और बाधाओं का सामना करते हैं, तब क्या हम मुड़कर पहले जीवन की ओर देखने की लालसा करते हैं? क्या आपके आज के जीवन में मिस्र आपको आकर्षक लगता है?

परमेश्वर इतने क्रोधित हुए कि, कालेब और यहोशू (दो जासूस जो विश्वासी बने रहे) को छोड़ सारे अविश्वासी राष्ट्र का सम्पूर्ण विनाश कर मूसा द्वारा एक नए राष्ट्र को बनाने की ठानी (गिन.१४:१२)। मूसा ने राष्ट्र के लिये मध्यस्ती की और उनके विद्रोह के लिये परमेश्वर से क्षमा याचना की। परमेश्वर ने उनके पापों को क्षमा किया क्योंकि परमेश्वर ने जैसा सोचा था वैसा उनके साथ न किया, फिर भी वो सज़ा से न बचे: २० वर्ष से ऊपर का हर व्यक्ति निर्जन प्रदेश के उन ४० वर्षों में वहीं मर जाएगा और उस वाचा की भूमि को देख भी ना पाएगा। जिन नवजात शीशु, बच्चों और किशोरों ने ४० वर्ष तक अपने माता-पिता के पापों का फल भुगता वही उस फलती-फूलती भूमि को देख पाएंगे।

इब्रानियों की पत्री का लेखक निर्जन प्रदेश में भटके हुए लोगों के विषय को चुनता है: उनका हृदय दुष्ट और अविश्वासी था, जिसके कारण उन्होंने विद्रोह किया (इब्रा.३:१२-१८)। आपको क्या लगता है, क्यों उनका मन विद्रोही हो गया? इससे आज हम क्या सीख सकते हैं?

क्या परमेश्वर की पहले से यह योजना थी कि कनान में प्रवेश कराने से पहले उनके लोगों को ४० वर्ष तक इंतज़ार करना होगा ?

जब परमेश्वर ने अपने लोगों का अस्विकार किया, तो अन्त में इस्राएलियों ने अपना मन बदला और कनान पर काबू करना चाहा, जिसका अन्त असफल हार से हुआ। आपको क्या लगता है कि वो क्यों असफल हुए?

"कादेश में कई दिनों तक रहना" उनके लिये एक ऐसी शर्मिंदगी की बात बन गई जो एमोरियों के दक्षिणी सीमा के पास बिताए बाकी ३८ सालों तक उनका पीछा करती रही।

व्य.वि. २:१–३:११ 'रेगिस्तान में बिताए वो साल' गुरूवार ३ जनवरी

प्राचीनकाल से मिस्र और कनान की सीमाओं के बीच सेईर पर्वत खड़ा था। इस समय तक यह जगह याकूब के भाई एसाव के वंशजों की हो चुकी थी जो उन्हें ईश्वर की ओर से दिया गया था (उत्पत्ति ३६:८; यहोशू २४:४)। यह जगह पर्वतों की अनेक श्रृंखलाओं से बनी थी (एक या दो पर्वतों से नहीं) और इसीलिये इसका नाम प्राचीनकाल से वहां के निवासी सेईर जो होरी नामक जाति का था उसके नाम से पड़ा (उत्पत्ति ३६:२०)।

व्यवस्थाविवरण १:४० में जहाँ इस्त्राएलियों ने ३८ साल पहले कादेश बर्निया से कनान देश में प्रवेश करने से इनकार कर परमेश्वर की आज्ञा का विद्रोह किया और परमेश्वर ने उस पीढ़ी को दोषी करार देते हुए उन्हें कनान की विपरीत दिशा में दक्षीण की ओर लाल समुद्र (याम सुफ) की ओर बढ़ने को कहा।

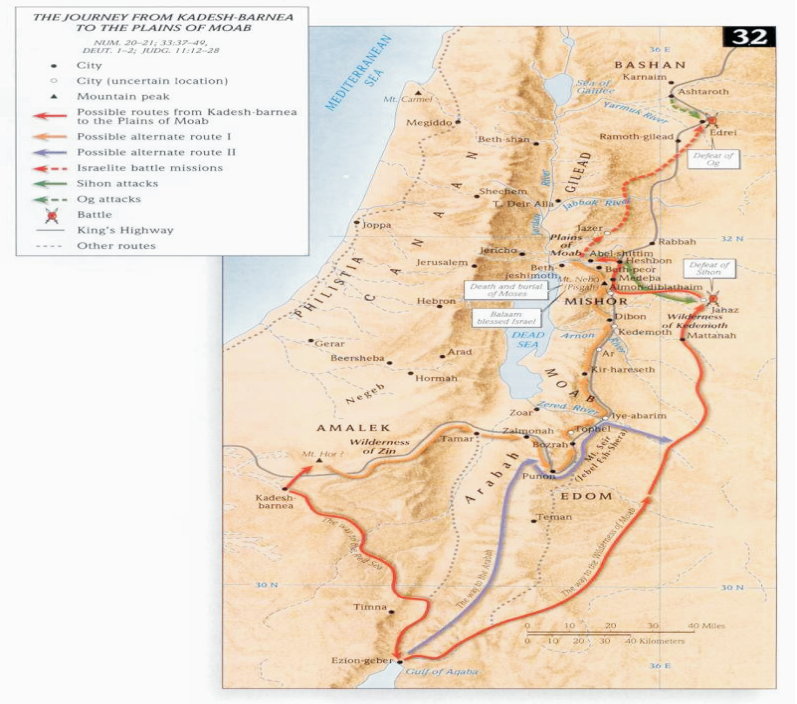

उत्तरी सीमा में बसे एदोम के पूर्वी भाग से गुज़रने से पहले, ये लोग एज़ीओन गेबेर नामक एक विख्यात समुद्री बन्दरगाह जो अकाबाह की खाड़ी के उत्तर में है वहाँ से गुज़रे होंगे। इसी के समान गिनती २०:१७ की घटना जहाँ एदोम ने इस्राएलियों को अपने देश के राजकीय महामार्ग जहाँ से अकाबाह की खाड़ी और सीरिया में दमिश्क के बीच बडे व्यापार किये जाते थे वहाँ से होकर जाने की अनुमती नहीं दी। ये शायद ऐसा ही था जैसे आज पुणे मुंबई के द्रुतगति मार्ग पर मोटर साईकिलों और दूसरे दो पहिया वाहनों को आने जाने की मनाई है।

गिनती २० से बिल्कुल अलग व्य.वि. २ यह बताता है कि इस्राएल उनसे पानी और भोजन खरीद सकते थे। यह शायद इसलिये भी हो पाया क्योंकि वे एदोम की भूमि के किनारों से होकर जा रहे थे। चाहे जो भी हो, पर आपके विचार से एसाव क्यों इस्राएल के विरुध्द था? दोनों राष्ट्रों के बीच कीतने समय तक यह बैर चलता रहा? अनसुलझाए ईर्ष्या/झगड़े अनेवाले अनेक शताब्दियों तक यदि चलते रहे तो बहूत विनाशकारी हो सकते हैं। मत्ती २ में एदोमी शासक महान हेरोद ने बेतलेहेम में पैदा हुए नए राजा मसीह को मार डालने की कोशीश में इस्त्राएलियों के कई नवजात बच्चों का वध करवा डाला।

बेदखल करना या मूल निवासियों को देश से बाहर निकालना यह उस देश के पापों के प्रती न्याय करने का परमेश्वर का एक सामान्य तरीका था। इस समय इस काम को करने के लिये परमेश्वर का चुना हुआ सेवक देश इस्राएल था (व्य.वि. ७:१-२; ९:५-६)। साथ ही दूसरा कारण यह भी था कि इस्राएल के पूवर्जों/धर्मवृध्दों से परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की थी उस प्रतिज्ञा को पूरा करना और इस्राएल पर अपना प्रेम बनाए रखना। फिर भी परमेश्वर ने इस्राएल के साथ-साथ अन्य देशों को अपने स्थान से बेदखल कर उनका न्याय करने के लिये मूर्तीपूजक देशों का भी अपने सेवक के रुप में उपयोग किया (यिर्म.२५:८; २७:६-८; आमोस १-२; २राजा १७ आदि)। बेदखल करने का सम्बन्ध बेदखल किये गए व्यक्ति की धार्मिकता पर निर्भर न था।

जिनको बेदखल किया गया वो कनान की तरह विशाल पराक्रमी योध्दा थे; विश्वास के लिये यह इतना अर्थपूर्ण क्यों था? आपको क्या लगता है, परमेश्वर ने मोआब, अम्मोन, एदोम और कप्तोर (पलिश्तियों) को उनकी भूमि क्यों दी? क्या परमेश्वर इस्राएल की तरफदारी कर रहे थे? (आमोस ९:७ भी देखें)।

कादेश छोड़ने के समय से लेकर ज़ेरेद का सोता (एदोम और मोआब के बीच की सीमा) पार करने के लिये परमेश्वर ने ३८ साल क्यों लगने दिये जबकि यह दूरी केवल कुछ ही हफ्तों में तय की जा सकती थी?

निर्जन प्रदेश में जीवन के चालीसवें वर्ष में, यरदन नदी के पूर्वी भागों के दो एमोरी राजाओं को अभी हाल ही में इस्राएल ने परास्त किया था। इसका अर्थ है अर्नोन नदी से लेकर यार्मुक नदी से आगे की सारी सीमा जो करीब १५० मिल तक फैली है उस पर हाल ही में इस्राएलियों का अधिकार था, (नक्शा ३२ देखें)।

विशाल राजाओं के कुल से सिर्फ एक राजा ओग ही बचा था और उसे भी मार डालने के बाद

आपको क्या लगता है कि इस समय लोगों की मन:स्थिती और आत्मविश्वास कैसा रहा होगा? आपको क्या लगता है; क्यों परमेश्वर ने ये दो विजय दिलाए?

परमेश्वर में विश्वास के द्वारा इस्राएलियों को अपने डर पर काबू पाना था। आपके कौनसे डर हैं जो परमेश्वर में आपके विश्वास में बाधा लाते हैं?

व्य.वि. ३:१२–२९ 'यरदन पार का उत्तराधिकार' शुक्रवार ४ जनवरी

कृपया फिर से नक्शा ३२ देखें, यरदन के पूर्वी भाग (यरदन के परे का भाग) पर ध्यान दो। यरदन पार का भाग इस्राएलियों के तीन कुलों को (स्पष्ट कहा जाए तो अढ़ाई कुल) को दिया गया था। क्या आप उन सीमाओं को देख रहे हैं जहाँ रूबेन, गाद और मनसेह के आधा कुल बसा है? यहाँ मूसा इन यरदन पार के निवासियों को याद दिला रहा है कि वो उस पार जाकर कनान की भूमि पर कब्ज़ा करने में अपने बाकी भाईयों की मदद करें। वास्तव में इन अढ़ाई कुलों का स्वभाव कैसा था (गिन. ३२ देखें)?

जब परमेश्वर आशिषों से आपके जीवन को भर देते हैं तब, क्या आप बड़ी आसानी से अपने आस–पास के लोगों की ज़रूरतों को भूल जाते हैं?

मूसा अपने लोगों को क्यों याद दिलाता है कि परमेश्वर अब भी उनके लिये लड़ रहे हैं (३:२२)?

मूसा के निरन्तर प्रार्थना करने के बावजूद भी परमेश्वर ने क्रोध में उसे कनान देश में जाने ना दिया, और सिर्फ पिसगा पर्वत से उसे देखने दिया। क्यों?

अबारिम पहाड़ियों में से पिसगा एक था, और नबो उनकी चोटियों में से एक था (व्य.वि.३२:४९; ३४:१)। यदि मूसा नबो की चोटी पर खड़ा था तो वह समुद्र तल से २६०० फीट की ऊंचाई पर था।

इसी वर्ष मोआब के मैदानों में रहते समय, परमेश्वर ने मूसा से उसकी अगुवाई का काम यहोशू को सौंपने को कहा। गिनती के २७:१८–१९ के समान्तर अनुछेद में सारी प्रजा के सामने यहोशू को मूसा के बाद अगुवाई करने का भार सौपा गया; हालांकि यहोशू को पहले ही परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई का काम सौंपा जा चुका था।

व्य.वि. ४ 'आज्ञाकारिता की पुकार' शनिवार ५ जनवरी

अपनी खुद की भलाई के लिये परमेश्वर की आज्ञा पालन करने के महत्व को याद दिलाता है। आप सोच रहे होंगे कि इस्राएल को मिस्र से छुड़ाने के लिये परमेश्वर ने जो अचम्भे के काम किये उसका आभार प्रकट करने हेतू इस्राएली अपने आप ही परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करेंगे। वाचा देने से पहले से ही परमेश्वर लगातार इन हठ्ठी, विद्रोही लोगों पर अनुग्रह बरसाए जा रहे थे। उनको परमेश्वर के मार्गों की याद दिलाने के लिये एक लिखित नियम आवश्यक था। परमेश्वर ने जो नियम बनाए उसमें न तो उन्हें कुछ जोड़ना था और न कुछ कम करना। मोआब के मैदानों में

जब वे इन्तज़ार कर रहे थे, तब मूसा ने उन्हें हाल ही में हुई एक घटना की याद दिलाई (गिन.२५:१-२) जब इस्राएलीयों ने मोआबी स्त्रियों का नेवता स्वीकार किया और उनके साथ मिलकर बालपोर देवता को दण्डवत किया और बली चढ़ाया - खुलेआम मूर्तीपूजा का पाप जिसने वाचा का उलंघन किया। मूर्तीपूजक पंथ के यज्ञों का एक भाग था मोआबी और मिद्यानी स्त्रियों के साथ कुकर्म करना; जिसमें इस्राएली शामिल हुए। दूसरे कई मूर्ती पूजा की तरह इसे जननशक्ति का एक धर्मकृत्य माना जाता था, जिसका मकसद था देवताओं की खुशामद करने के लिये उनको इस बात का आश्वासन देना कि स्वस्थ मनुष्यों और जानवरों का जन्म होगा। इस पाप की कीमत महामारी से २४००० जानें देकर चुकाना पड़ा, जिसकी तुलना पहली पीढ़ी के उन ३००० लोगों की मौत से की जा सकती है जिन्होंने ४० साल पहले सोने के बच्छड़े की मूर्ती बनाकर उसकी पूजा की। इतिहास के इन कठोर उदाहरणों की परवाह किसी को न थी।

क्या कुछ ऐसे साधन हैं जहाँ अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये परमेश्वर के पास जाने के बजाए आप तुरन्त उन साधनों की ओर दौड़ पड़ते हैं?

परमेश्वर चाहते थे कि इस्राएल उन सारे महान अनुभवों को हमेशा याद रखें जो परमेश्वर ने उनके लिये किये थे ताकि वो आने वाले अनेक पीढ़ियों को वो बता सकें। परमेश्वर उनका ध्यान फिर से उस सीनै पर्वत (होरेब) की ओर ले गए जहाँ परमेश्वर ने उन्हें नियम दिये थे। आज की पीढ़ी उस समय नवजात शिशु, बालक, किशोर और १६ साल के आस पास रहे होंगे। एक तपते हुए रेगिस्तान में १५००+ फुट पहाड़ी आग से धधक रही है और उससे एक घना धुँआ उठते हुए आप देख रहे हैं। और पहाड़ की चोटी से आती एक गरजती हुई आवाज़ को भी आप सुन रहे हैं, हालांकि आप परमेश्वर के आकार या रुप को आप नहीं देख पाते। यह एक परम अतुलनिय घटना का अनुभव था, इसके समान कोई घटना न तो उन लोगों ने - और न ही हमने कभी देखा या सुना होगा।

सीनै पर्वत पर लोगों ने परमेश्वर के रुप को तो न देखा, परन्तु उन्होंने एक आवाज़ सुनी और परमेश्वर की उपस्थिती का एक नाटकीय प्रदर्शन देखा। यह उनकी अपेक्षा के बिलकुल विपरीत रहा होगा क्योंकि दूसरे देशों के देवताओं को उनके विशिष्ट रूप और मूर्तियों से पहचाना जा सकता था। स्वयं को प्रकट करने की अभिलाषा का परमेश्वर ने परहेज़ किया, क्योंकि परमेश्वर आत्मा है; और दूसरे देवताओं की मूर्तियां बनाकर उन्हें परमेश्वर मान उसकी उपासना करना परमेश्वर कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे (४:१५-२४)।

परमेश्वर अपने अतुलनियता का बयान करता है: सीनै पर्वत पर परमेश्वर को बोलते हुए जैसे इस्राएल ने सुना, ऐसा सौभाग्य दूसरे किसी भी राष्ट्र का कभी न था। साथ ही मनुष्यों के बनाए मिस्रि देवताओं से बिलकुल विपरीत, परमेश्वर ने स्वयं इस्राएल के प्रति अपने प्रेम के कारण उन्हें मिस्र जैसे शक्तिशाली राष्ट्र से छुड़ाया (४:३५-३७)। परमेश्वर के अनुग्रही प्रेम के कारण ही इस्राएल को छुड़ाया और वाचा की भूमि पे लाया गया(७:७-८)। इस्राएल ने परमेश्वर के प्रेम को न तो अपने कर्मों से कमाया और न ही उन्होंने पहले परमेश्वर से प्रेम किया। परमेश्वर ने पहले प्रेम की पहल की और अपने लोगों के पास गए। इसके बदले में परमेश्वर ने चाहा कि वे लोग भी

उनके प्रेम का बदला; पलटकर परमेश्वर से प्रेम करके और विश्वास के साथ उनकी आज्ञाओं को मानकर दें।

परमेश्वर का चरित्र कभी नहीं बदलता (मलाकी ३:५)। परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रेम और मसीह की वाचा में रहकर आज्ञा पालन करते हुए हमारे प्रेम को एक समान रुप में हम कैसे देख सकते हैं? (१यूहन्ना ४:१०,१९; ५:२-३ देखें)।

व्य.वि. ५ 'दस आज्ञाएं' सोमवार ७ जनवरी

ऐसा लगता है कि यहाँ से मूसा का दूसरा उपदेश आरम्भ होता है, और व्यवस्थाविवरण के एक नये और बड़े भाग का भी आरम्भ होता है (व्य.वि.५-११), जिसकी शुरुआत अध्याय ५ में होरेब (सीनै पर्वत) पर दिये गए नियमों से होता है। सम्पूर्ण रुप से इस भाग में सामान्य नियमों का समावेश है, और बाद में अध्याय १२-२६ तक बाकी के विस्तारित नियम हैं। कुछ विद्वान यह बहस करते हैं कि अध्याय १२-२६ के इन विस्तरित नियमों का सम्बन्ध अधिकतर उन दस आज्ञाओं से है। इसके अलावा, यह भाग इस बात पर भी ज़ोर डालता है कि इस्त्राएलियों से परमेश्वर कितना प्रेम करते हैं।

वचन २-३: "होरेब पर दी गई पहली वाचा": होरेब है सीनै पर्वत। हालांकि पहली बार जब नियम दिये गए तब सुनने वाले सभी बच्चे थे, मूसा इस बात पर ज़ोर डालते हैं कि यह वाचा उनके लिये भी है, सिर्फ पहली पीढ़ी के लिये ही नहीं, अर्थात् यह वाचा इस्त्राएल के भावी पीढ़ी के लिये भी थी।

वचन ४-५: मूसा उन्हें याद दिलाता है कि पहली बार जब नियम दिये गए तब कैसे परमेश्वर ने आग और बादल के बीच से बातें की और यह भी की परमेश्वर और लोगों के बीच मूसा को मध्यस्ती करनी पड़ी क्योंकि लोग परमेश्वर से बहुत डरे हुए थे (आग और बादल परमेश्वर की शक्ति और अधिकार को दर्शाते हैं)। शायद यह इसलिये याद दिलाया गया कि वे यह जान सकें कि सिर्फ उन्हें नियमों का एक गुच्छा ही नहीं मिला (हालांकि हमें जो मिला है उसकी तुलना में यह कुछ भी नहीं था) परन्तु परमेश्वर के साथ उनका वैयक्तिक रिश्ता है।

हम जिस वाचा से बन्धे हैं उस वाचा की मध्यस्ती करने वाले के बारे में इब्रानियों ८:६ हमें क्या सिखाता है?

परमेश्वर के साथ आपका वैयक्तिक रिश्ता है या फिर कुछ नियमों एक गुच्छा?

वचन ६: परमेश्वर स्वयं का वर्णन गुलामी से उनको छुड़ाने वाले के रुप में करते हैं; याद रहे कि पहली बार जब यह नियम दिये गए वो था उनको गुलामी से छुड़ाने के तुरन्त बाद, अर्थात् लोगों के पास कभी कोई धार्मिक नियम नहीं थे। मिस्रियों के पास जो था उन्हें बस उसका ही ज्ञान था।

आज्ञाओं से लोगों को यह निर्देश दिया जाना था कि कैसे उन्हें परमेश्वर की आराधना करना है और एकजुट होकर रहना है, ताकि मिस्र की उपासनाओं का और अन्य देश जहाँ से होकर वो गुजर रहे थे उनके झूठे देवताओं का असर उन पर न पड़े, और न ही बाद में ये विधियां उनके साथ वाचा की भूमि में पहूँचें।

इस्राएल का मिस्र की गुलामी से बचाया जाना और नई वाचा के तहत यीशु मसीह द्वारा हमारा बचाया जाना इसमें क्या समानताएं हैं?

वचन २२-३३: मूसा उन्हें याद दिलाता है कि ४० साल पहले सही में लोग परमेश्वर से घबराते थे, और आदर करते थे, इसीलिये मूसा को उनकी मध्यस्ती करने का आग्रह किया; इससे परमेश्वर खुश हुए और यह अपेक्षा की कि लोग इसी तरह हमेशा उनका आदर करते रहें। यह नई पिढ़ी सीधे परमेश्वर को नहीं देख सकती, फिर भी, मूसा के द्वारा उन्हें सिर्फ नियम मिले। मूसा उन्हें याद दिलाता है कि इन नियमों के अधिकार पर उन्हें विश्वास रखना चाहिये क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से दिये गए हैं।

दस आज्ञाओं पर अधिक जानकारी (व्य.वि.५:७-२१)

१. मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना: इसका वास्तविक अर्थ है " मेरी उपस्थीती में" किसी और देवता की कोई जगह नहीं - किसी और के लिये कतई जगह नहीं। यह एक विवाह की तरह है, दूसरी तरफ छोटा सा भी कुछ और नहीं, आप किसी दूसरे को नहीं देखते, दरवाज़ा बन्द है, और वहाँ सिर्फ एक ही व्यक्ति है; पहला स्थान परमेश्वर का होना चाहिये, उसे अपने स्थान पर गर्व होना चाहिये। उस समय की धार्मिक संसकृती में अनेक देवताओं को पूजा जाता था, ऐसे देवता जो खेती और दूसरे अलग-अलग ज़रूरतों पर निर्भर रहते थे, और इसीलिये इस बात का अति स्पष्ट होना अनिवार्य था।

२. कोई मूर्ती नहीं वर्ना सज़ा: लोगों को शिक्षा की आवश्यक्ता थी, क्योंकि अलग-अलग मूर्तियों के कारण वे अनेक देवताओं के आदि हो चुके थे। याद करो कि पहली बार जब नियम दिये जा रहे थे और मूसा उन्हें लेने गया था तब कितनी जल्दी लोगों ने सोने का बच्छड़ा बना लिया था (निर्ग.३२)। परमेश्वर के प्रतिरुप में भी उन्हें कोई मूर्ती नहीं बनानी थी-आपको क्या लगता है ऐसा क्यों था? ध्यान दो कि सज़ा ३ से ४ पीढ़ियों तक मिलती है लेकिन परमेश्वर का प्रेम एक हजार पीढ़ी तक। (मूर्तीपूजा के बारे में अधिक जानने के लिये व्य.वि. ४ भी देखें)।

३. तू अपने प्रभु परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना(शाब्दिक अर्थ "यहोवा के नाम को बिना किसी मकसद के उठाना"): परमेश्वर ने स्वयं का नाम बताकर पहले मूसा पर और फिर फिरौन पर अपने आप को प्रकट किया, और फिर चमत्कार किये, इसलिये परमेश्वर के नाम का उपयोग बहुत महत्व रखता था, क्योंकि इससे पहले उनका नाम कभी प्रकट नहीं किया गया था। परमेश्वर का

नाम लेकर कोई काम करना या शपथ खाना, या फिर परमेश्वर के नाम का फायदा उठाने का प्रयत्न करना उनके लिये खतरनाक हो सकता था।

उपयोग: हमारे लिये, परमेश्वर के नाम का उपयोग जादुई या रहस्यमय बात नहीं है, लेकिन हम जो करते हैं उसके और परमेश्वर/मसीहीयत के बीच एक सम्बन्ध बनाने का काम करता है। परमेश्वर के नाम से गलत काम करने के कारण कितने बार आपने लोगों को मसीहीयत की बुराई करते सुना (उदाहरण के तौर पर.....)? क्या हम एक मसीही होने का दावा करते हैं, और फिर एक गैर मसीही की तरह बर्ताव करते हैं, उदाहरण–विश्वास न बाँटना, मिटिंग में न आना, पीठ पीछे बुराई करना, हमारे आस–पास गन्दे चुटकुले/बातें सहना, लोगों के साथ कठोरता से पेश आना (उदा. कॉल सेन्टर), तेजी से गाड़ी चलाना आदि, ताकि हमारे गैर मसीही दोस्त इन बातों को देखें और फिर इन बातों को मसीहीयत के साथ जोड़ दें?

४. विश्राम दिन को मानकर पवित्र रखना: उन्हें यह याद रखना था कि मिस्र में वे गुलाम थे, इसीलिये विश्राम दिन (सबत का दिन अर्थात् शनिवार के समान) की आज्ञा गुलामी से छुटकारा और परमेश्वर द्वारा बचाए जाने से जुड़ा था; इसका मकसद था एक दिन बिना परीश्रम के, एक विश्राम का दिन, लेकिन परमेश्वर पर ध्यान लगाए रखने और यह याद रखना कि परमेश्वर ने उनके लिये क्या क्या किया यह समय भी उसमें शामिल था, इसका क्या अर्थ है इस बात पर अधिक विस्तार से आगे बताया गया है लेकिन यहाँ पर हम आज़ादी की सच्चाई को जान सकते हैं (अब हमेशा गुलामों की तरह काम करते रहना न था) और इस आज़ादी का उपयोग परमेश्वर की आराधना के लिये करना था।

महत्व: यह परमेश्वर के लिये महत्वपूर्ण था, लेकिन लोगों को शायद स्पष्ट रुप से यह पता न था; बिना इसके क्या वो रुकते और परमेश्वर के बारे में सोचते? क्या वो सिर्फ वार्षिक त्यौहारों का ही इन्तज़ार करते? शायद यह एक रास्ता था परमेश्वर के साथ वैयक्तिक रिश्ता बनाने का जो उस समय के दूसरे धर्मों की आपसी स्पर्धा से बिलकुल अलग था, क्योंकि वैयक्तिक आराधना के लिये कोई स्थानिक मूर्ती वहाँ नहीं थी।

उपयोग: ध्यान रखो कि दस आज्ञाओं में से यही एक ऐसी आज्ञा है जिसकी पुष्टी नए नियम में कभी भी नहीं की गई, और वास्तव में इसे यीशु ने एक चंगाई और अच्छे कर्म करने का एक मूद्दा बनाया; लेकिन इसके तहत दिये गए उस उद्देश्य का क्या जो बताता है कि व्यस्त जीवन के तनावों के बीच भी परमेश्वर की आराधना के लिये समय निकालना? क्या आप प्रतिदिन परमेश्वर की आराधना करते हैं, या फिर काम, पारीवारिक जीवन और दूसरे काम परमेश्वर को दूर भगा देते हैं?

५. अपनी पिता और अपनी माता का आदर करना: यहाँ हम परमेश्वर से सामाजिक नियमों की ओर मुड़ते देखते हैं और उनमें पहला है माता–पिता, एक परीवार की नींव जो समाज का एक अंग है। आपको क्या लगता है ऐसा क्यों है? इस्राएली समाज में जहाँ विस्तारित परीवार एक साथ रहते और काम करते थे, इस आज्ञा में वयस्कों को भी जोड़ा गया होगा जिनको अपने वयस्क माता–पिता का आदर करना था। परीवार समाज का एक मुख्य अंग था, उदाहरण–

परीवार के अनुसार ज़मीन का बंटवारा किया गया था, शिक्षा का आरम्भ परीवारों में हुआ, सेना के लिये लोग भी परीवार से चुने गए। राष्ट्र की आर्थिक और धार्मिक सफलता परीवार की सफलता पर निर्भर थी (और इसका विस्तार नातों, गुटों और कुलों के द्वारा)। माता-पिता का आदर प्रतीक था पूरे सामाजिक गुट के आदर का जो वाचा के तहत बनाया गया था। व्य.वि. २१:१८-२१ में अनादर की सज़ा के बारे में भी देखो।

उपयोग: कल्पना कीजिये एक ऐसे समाज की जहाँ माता-पिता का मान सम्मान नहीं होता। यह कैसा लगता है, इससे क्या होता है? यह हमारी तरह लगता है: यहाँ आदर और अधिकार के बुनियादी बातों की समझ नहीं थी; लोगों को परेशान नहीं किया जा सकता; वे अपने पर काबू नहीं रख पाते; कानून और स्तर का तब तक कोई मतलब नहीं होता जब तक पकड़े न जाओ; एक बुरे वातावरण , आभारीपन न रखने वाले बच्चे आदि के कारण परीवार कठीन हो जाता है। क्या हम अपने बच्चों से माता-पिता और अधिकारों के आदर की अपेक्षा रखते हैं?(१तिमु.३:४-५ देखें)।

६. तू हत्या न करना: यहाँ जीवन को एक मौलिक महत्व दिया गया है-बाद की आज्ञाएं ऐसी परीस्थितियों से निपटेंगी जहाँ मृत्यु का कारण समझने में कुछ शंकाएं हैं (ऐच्छिक हत्या, दुर्घटना ईत्यादि)या फिर जहाँ मृत्यु की सफाई पेश जाए (न्यायिक या सैनिकी)। लै.व्य. १९:१७ में देखो जहाँ क्रिया से पहले स्वभाव उस पर हावी हो जाता है, जिससे यीशु भी निपटते हैं (मत्ती ५:२)। क्या परमेश्वर को मानवी जीवन समाप्त करने का हक्क है? क्या मनुष्य को ये हक्क है?

७. तू व्यभिचार न करना: यह विवाह की सीमाओं को स्पष्ट करता है। पूरे जीवनकाल में मनुष्य इन सीमाओं के बाहर-भितर तेजी से आता जाता रहा है, अपने मौलिक रिश्ते में संघर्ष करते हुए; जब व्यभिचार होता है तो इससे जो नुकसान होते हैं इसके कई उदाहरण पवित्र शास्त्र में हैं (उदा. दाऊद और बतशेबा); यहाँ हम एक साधारण कानून देखते हैं जो एक गहरी बात बताता है, दो लोगों का प्रेम और उनकी वचनबद्धता। साथ ही समाज का नींव था विवाह, जिसके द्वारा और बड़े सामाजिक गुट(परीवार और कुल) उभरेंगे। व्य.वि. २२:२२ व्यभिचार को एक प्रधान अपराध बताता है। बाद में परमेश्वर ने इस्त्राएलियों के साथ बान्धे परमेश्वर के वाचा तोड़ने को व्यभिचार के रूप में दर्शाते हुए(उदा.होशे ३:१) उसके महत्व को और भी बढ़ाया।

उपयोग: विवाहितों के लिये: क्या आप अपनी सीमाओं को सुरक्षित बनाए रखे हो, इस बात को निश्चित करते हुए कि आपके दिल और दिमाग़ में कोई भी दूसरा व्यक्ति आपके पती या पत्नी की जगह नहीं लेगा? व्यभिचार का आरम्भ मन से होता है, शरीर से नहीं।

८. तू चोरी न करना: यह आपके वैयक्तिक मालमत्ता और उसके मालकी हक्क पर लागू होता है, साथ ही अपने खुद की समृद्धि का ध्यान खुद रखकर किसी दूसरे की मालमत्ता की चोरी ना करने की जिम्मेदारी आप पर डालता है। और इस्त्राएली एक ऐसे समाज से आए थे जहाँ पर यदि मिस्त्रि शासक चाहे तो उनकी सम्पत्ति पर कब्ज़ा कर सकता था। नए समाज में दूसरे समाजों के अधिकार को बिना नुकसान पहूँचाए सबकुछ न्यायपूर्ण होना था। उस समय के दूसरे समाजों के विपरीत, चोरी के लिये कभी भी मृत्युदंड या हाथ पैर काटने की सज़ा नहीं दी जाती थी।

९. तू किसी के विरुध्द झूठी साक्षी न देना: एक नैतिक कानून जो इस्राएली परीवार से आगे बढ़कर पूरे इस्राएली समाज पर लागू था। जो कोई झूठी साक्षी देता उसे क्या दंड मिलता यह जानने के लिये व्य.वि. १९:१६-२१ देखें। सच्चे, विश्वास योग्य गवाह पर निर्भर होना मुख्य बात थी-हमारे आजके न्याय व्यवस्था के लिये यह भी लागू है। एक ऐसे समाज की कल्पना करो जहाँ इमानदारी की न तो अपेक्षा की जाए और न ही कोई इमानदारी को माने- आप कितना सुरक्षित महसूस करेंगे? इन स्तरों को पहले ही से स्थापित करने के परमेश्वर की बुध्दिमानी के बारे में सोचो।

१०. तू किसी और की पत्नी, घर, सम्पत्ति का लालच न करना: यह अलग है क्योंकि यह स्वभाव के बारे में एक आज्ञा है, जबकि बाकि सभी का सम्बन्ध क्रिया से है-यह पहले और दूसरे आज्ञा से जुड़ा है इसके बारे में आपकी सोच क्या है? यह जैसे पहले उन लोगों का भाग था ठीक उसी तरह आज हमारा भी भाग है। समाज कुछ स्तर हैं इसे स्विकार करने के (विज्ञापन आपको प्रोत्साहन देता है कि जो आपके पास नहीं है उसे पाने की आप लालसा करो और जाकर वह खरीद लो) दूसरों से न छीनो।

उपयोग: आपके पास जो है क्या आप उससे संतुष्ट हैं, या फिर जो दूसरों के पास है उसे पाने की आप ईच्छा रखते हो? क्या आप दूसरों के प्रति बुरी भावना रखने की लालसा में पड़ते हो, शायद कलीसिया में उन लोगों से जिनके पास सम्पत्ति है, छुट्टियों पर जाते हैं, और उनके पास ऐसे रिश्ते हैं जो आपके पास नहीं हैं?

व्य.वि. ६ 'उस भूमि पर जीवन' मंगलवार ८ जनवरी

यह अध्याय मूल रुप से वाचा की भूमि में इस्राएलियों के जीवन पर, वाचा की केन्द्रियता और उसके प्रति विश्वास पर आधारित है। यह अध्याय एक और विषेश बात पर केन्द्रित है, वह है शिक्षण (वचन २०-२५) और विशेष रुप से हमारे बच्चों का शिक्षण (व.७), ताकि परमेश्वर ने जो किया है उसे भूल न जाएं।

अपने प्रतिदिन के जीवन में परमेश्वर और उसकी महानता के बारे में जो बातचीत आप करते हैं उसे और बेहतर कैसे बना सकते हैं? परमेश्वर को प्रेम करने के इस अध्याय के सामान्य सिद्धान्त को आप अपने जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं?

क्या परमेश्वर का वचन आपके हृदय में बसा है? यदि नहीं तो निर्णय बनाओ कि आप वचनों को याद करोगे ताकि हर परिस्थिती में परमेश्वर के करीब रहने में आपकी मदद हो सके। दूसरे कौनसे तरीके से आप पवित्र शास्त्र को अपनी बातचीत में और विचारों में शामिल कर सकते हैं?

माता-पिता: कौनसी ऐसी परिस्थितियां हैं जहाँ आप अपने बच्चों के साथ पवित्र शास्त्र का उपयोग कर सकते हैं?

माता-पिता: अपने बच्चों के साथ आपने किस बात पर चर्चा की? किस बात पर चर्चा नहीं

की? अपने बच्चों के साथ आप पवित्र शास्त्र की किस बात पर चर्चा कर सकते हैं और कब करेंगे इस बात का निर्णय बनाओ। उनसे पूछो कि परमेश्वर, कलीसिया, पारीवारिक जीवन और सामान्य जीवन के बारे में क्या वो कुछ प्रश्न पूछना चाहते हैं? यदि आप इस सम्बन्ध में कुछ सोचने में असमर्थ हैं तो, अपने बच्चों के उम्र और उनकी समझदारी के अनुसार उनके साथ क्या अध्ययन करें और किन बातों पर चर्चा करें इस बारे में कलीसिया के किसी माता-पिता से सलाह लो।

अधिक जानकारी

वचन १-६: अध्याय ५ की आज्ञाओं के बाद एक भाग आता है जिसमें अधिकतर पुनर्विचार का समावेश है, और एक उपदेश भी। परमेश्वर के पीछे चलने से आशिषित होने का फायदा होता है इस बात को समझाने के बाद वह विख्यात अनुछेद आता है जो यीशु ने उन लोगों के प्रश्न के जवाब में कहा जब लोगों ने उनसे पूछा कि सबसे बड़ी आज्ञा कौनसी है(मरकुस १२;२८-३०)। जबकि हम एक अलग वाचा से बन्धे हैं फिर भी परमेश्वर से हमारे रिश्ते कायम रखने के इस अध्याय के सिद्धान्तों का पालन करना बड़ा आसान है।

आज्ञा है कि पूरे तन,मन और आत्मा से परमेश्वर से प्रेम करो-यह तीन भागों-हृदय, आत्मा और शक्ति के मिश्रण से बनाए गए मनुष्य का वर्णन नहीं कर रहा है। यह एक विचार है जो व्यवस्थावियरण में कई जगहों पर पाया जाता है जिसका मकसद है एक मन से और पूरी लवलीनता से उस और ले जाना जहाँ सम्पूर्ण हृदय और आत्मा से आज्ञापालन होता है। हमारे लिये इसका अर्थ है परमेश्वर की ईच्छा को ढूंढना, उसपर विचार करना और प्रतिदिन उसकी प्रशंसा करने का निर्णय करना, यह याद रखते हुए कि ज्योति में चलने का अर्थ है पापों की कबूली और अनुग्रह की सराहना।

परमेश्वर को अपने पूरे मन से प्रेम करने का एक भाग है पवित्र शास्त्र से प्रेम करना और वह क्या कहता है, किस जगह पर कहता है और क्यों कहता है, यह जानने का भरसक प्रयत्न करते रहना, तब हम पवित्र शास्त्र का उपयोग हमारे प्रतिदिन के जीवन में कर पाएंगे।

वचन ७-९ और २०-२४: माता-पिता को और पूरी जाति को सुबह में, बाहर जाते समय और शाम को अपने बच्चों से बार-बार बातें करके उन्हें समझा और सिखाकर इन बातों की छाप उनके दिलों पर लगाना था। याद रखने के लिये उन्हें इन वचनों को लिखना भी था। उन्हें यह भी निश्चय करना था कि वह उनसे इस बात का वर्णन करें कि परमेश्वर ने कैसे उन्हें किसी नई जगह पर लाने की, गुलामी से छुड़ाने की पहल की, और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन उनके जीवन में कैसे व्यवहारिक रूप से उनकी मदद कर सकता है।

वचन १०-०१२: जब सबकुछ अच्छा चल रहा है तो हम कितनी जल्दि परमेश्वर को भूल जाते हैं? जब कठिनाईयां हों तो परमेश्वर को ढूंढना और सब ठीक हो जाए तो फिर से उससे दूर चले जाना कितना आसान है?

वचन १३–१५: खतरा इस बात का है कि "आपके आस–पास के लोगों के देवताओं" के पिछे आप चलने लगो। अब हम सचे परमेश्वर के बारे में कुछ सीखें: वह जलन रखने वाला परमेश्वर है– इसका अर्थ क्या है? हमारे अन्तरदर्शन से हम जानते हैं कि यदि यह परमेश्वर के लिये कहा गया है इसका अर्थ है कि बंटी हुई भक्ति उसे मंज़ूर नहीं–यह वास्तव में एक विरोधी बात होगी।

व्य.वि. ७ 'प्रेम और न्याय' बुधवार ९ जनवरी

यह अध्याय दो विपरीत दिशाओं के बीच झूल रहा है: वो अपार प्रेम जो परमेश्वर इस्त्राएलियों से करता है और एक अत्यन्त कठोर तरीका जिसके द्वारा वाचा की भूमि में जो रह रहे थे उन निवासियों के साथ निपटा जाने वाला था।

इस अध्याया में लिखे परमेश्वर के प्रेम के भिन्न–भिन्न अभिभावों को लिखो। आपको क्या लगता है कि इस्त्राएलियों ने जब ये भावों को देखा होगा तो उन्हें कैसा महसूस हुआ होगा? जो लोग इस बात से निश्चित नहीं हैं कि परमेश्वर उनसे प्रेम करते हैं या नहीं, उन्हें आप नया नियम का कौनसा अनुछेद दिखाएंगे?

परमेश्वर ने उन्हें यह आज्ञा क्यों दिया कि वहाँ के निवासियों और उनके आराधना की सभी वस्तुओं को नष्ट कर डालें?

हमारे उपयोग के लिये: नई वाचा के तहत रहकर भी क्या आप पर परमेश्वर का जो प्रेम है उस प्रेम पर आप विश्वास करते हो?

इस अध्याय से आप उन स्वभावों और पापों के बारे में क्या सीखते हो जिन्हें आपको छोड़ना है?

अधिक जानकारी

वचन १–६, १६, २४–२६: वाचा की भूमि पर जब इस्त्राएली कब्ज़ा करेंगे तब वहाँ के निवासियों का विनाश एक कठोर और अनावश्यक बात दिखाइे दे सकती है। परन्तु फिर, यह बात जानकर शान्ति महसूस होती है कि यह आज्ञा देकर परमेश्वर इस्त्राएलियों और अपने दिये गए आज्ञाओं के सम्मान की सुरक्षा कर रहे थे। अपने आस–पास के गलत धर्मों के बीच रहकर उनसे बचे रहना और परमेश्वर की उपासना में लगे रहने में इस्त्राएली बहूत कमज़ोर थे; इसीलिये मजबूत उपाय करना आवश्यक था। व्य.वि. २०:१०–२० भी देखो जहाँ इस विषय को विस्तार से बताया गया है। एज्रा ९:१–१० पढ़ो और यह देखो कि जब उसे यहूदियों और आस–पास के देशों के लोगों के बीच हो रहे अन्तरजातीय विवाह की बात का पता चला तो उसकी प्रतिक्रिया कैसी थी। नए नियम का कोई अनुछेद आपको याद आ रहा है जो मसीहियों को कुछ ऐसी ही बात सिखाता है?

वचन ७–१५: यहाँ पर परमेश्वर इस बात का वर्णन करते हैं कि उनका इस्त्राएलियों के लिये प्रेम उनके अपने प्रेम और प्रतिज्ञा पर आधारित है, इस्त्राएलियों की विशाल संख्या पर नहीं। जब आपको कोई उपहार मिलता है या सभी बातें सही चलती हैं, तब यह सोचना आसान है कि

आपने कुछ कमाया है या फिर आपकी योग्यता के कारण आपने अच्छा भाग्य पाया है। लेकिन तब हम भूल जाते हैं कि इसमें परमेश्वर का हाथ है और सारी महीमा खुद को देते हैं।

वचन १७-२२: इन आज्ञाओं से जो शंकाएं पैदा होंगी परमेश्वर उनका उत्तर देते हैं- शंका यह है कि वहाँ के निवासियों पर वीजय पाने के लिये इस्राएली बहूत कम हैं, कमज़ोर हैं और उनके पास अनुभव की कमी है आदि। परमेश्वर इस बात की प्रतिज्ञा देते हैं कि उनको हराने वाले वही हैं; वह उन्हें इस बात की याद भी दिलाते हैं कि उन्हें मिस्त्र से बाहर परमेश्वर ने ही निकाल लाया था जो "नामुमकिन" था या फिर एक न होनेवाली बात थी।

उपयोग: जब आप परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं, आज्ञाओं और आपके जीवन के लिये परमेश्वर की ईच्छाओं को जानते हो; तब शंका करना आपके लिये कितना आसान होता है? परमेश्वर को और ऐसी परिथितियों में उसके सामर्थ को देखने के लिये प्रार्थना करो।

व्य.वि. ८ 'नियमों को याद रखना' गुरुवार १० जनवरी

इस अध्याय का मकसद है कि इस्त्राएलियों को परमेश्वर को न भूलने उसे याद रखने, और उसके नियमों का पालन करते रहने के लिये राज़ी करना।

वचन १-५: इस्राएलियों को उस मुश्किल समय की याद दिलाता है जब वो भटक रहे थे। परीक्षाओं के समय की चुनौतियाँ कैसे हमारे दिलों को जांचने का मौका हमें देती है? हम इससे क्या सीख सकते हैं? २कुरु.१:८-९ देखो।

परमेश्वर से आपको कौनसी आशिषें मिली हैं? अपने जीवन पर नज़र डालकर परमेश्वर ने जो भी आशिष (आत्मिक या शारीरिक)आपको दिये हैं उनके लिये परमेश्वर का आदर और आभार प्रकट करने के लिये कुछ समय निकालकर प्रार्थना करो।

वचन १८ "वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने का सामर्थ्य देता है": आपसे कम योग्यता वाले लोगों को क्या कभी आपने नीची नज़र से देखा और अपनी योग्यताओं के कारण आत्मसंतुष्ट महसूस किया? यह अनुछेद कैसे उस स्वभाव को चुनौती देता है?

वचन १९-२०: आपके लिये वह मूर्ती कौनसी है जो आपके हृदय में परमेश्वर के पहले स्थान की जगह ले लेता है?

अधिक जानकारी

वचन १-५: उन्हें याद दिलाया गया कि जब वे रेगिस्तान में भटक रहे थे तब प्रेम के कारण परमेश्वर ने कैसे उन्हें अनुशासित किया: इसके द्वारा उन्हें एक महत्वपूर्ण सबक सीखना था कि वह जो पीड़ा का समय था उसका कुछ मकसद था। उन्हें यह नहीं भूलना था कि वह समय उन्हें क्या सिखाना चाहता था। उन्हें यह सीखना था कि: अपनी अगुवाई में, परमेश्वर, उन्हें कठीन परीस्थितियों से पार कराएंगे यह देखने के लिये कि क्या वे उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं या नहीं; लेकिन इससे ज़्यादा, यह कि दु:खी समय उन्हें अपने हृदय को जांचने का मौका देते हैं;

और यह भी कि जीवन के लिये वह न तो खुद पर और न ही प्रकृती पर निर्भर रहें, लेकिन पूरी तरह सिर्फ परमेश्वर पर (मन्ना)।

वचन ६-१०: परमेश्वर उन्हें एक बड़ी भूमि देंगे जिसमें वो रहेंगे, जहाँ काम करना आसान होगा, उनको दूसरों के काम का भी फायदा मिलेगा; जब वो लोग वहाँ रहेंगे और सभी फायदों का अनुभव करेंगे, तब फिर उन्हें याद दिलाया गया कि उस समय भी निश्चय रूप से परमेश्वर की महीमा करते रहें। यहाँ एक दुविधा है: परमेश्वर भरपूर आशिष देने की प्रतिज्ञा करते हैं, और फिर भी इतनी भरपूरी से सम्पत्ति और समृद्धि पाने का एक नैतिक खतरा भी था, वह यह कि आत्मनिरर्भता परमेश्वर को भूलने की ओर ले जा सकती है क्योंकि यह बात बहूत कम दिखाई देगी कि वो परमेश्वर पर निर्भर हैं।

वचन ११-१८: परमेश्वर को भूलना ले जाता है आज्ञापालन न करने की ओर; तो "भूलना" यहाँ यह मायने रखता है कि परमेश्वर का विचार न करना और उसकी अपेक्षाओं के अनुसार न चलना। वचन १४ इस स्वभाव को घमण्ड के साथ जोड़ता है-वो यह है कि, हमें हमारी उपलब्धियों पर इतना घमण्ड हो जाता है कि इन उपलब्धियों को पाने में परमेश्वर ने हमारी कितनी मदद की इस बात को हम नहीं देख पाते।

वचन १९-२०: यदि आप परमेश्वर को भूल जाते हैं तो आप उसकी जगह किसी और को दे देते हैं-आप दूसरे देवताओं की उपासना में लग जाते हैं। तो भूलना शायद मासूमियत लगे, लेकिन हमेशा परमेश्वर की जगह हमारे जीवन में कोई और ले लेता है। परमेश्वर यहाँ इस्राएलियों को यह चेतावनी देता है कि वाचा का श्राप चुने हुए राष्ट्र को भी दिया जा सकता है।

व्य.वि. ९ 'इस्राएल ने वाचा का उलंघन किया' शुक्रवार ११ जनवरी

यह अनुछेद आंशिक रूप से निर्गमन के सोने के बच्छड़े के विवरण पर आधारित है, जो हाल ही में सीनै पर्वत पर दिये गए वाचा का उलंघन करना है। यह स्पष्ट था कि यह पहली बार नहीं हुआ था (व.२२-२४)। इस्राएल अन्य देशों से बड़ा नहीं था (अध्याय ७-८) और, यहाँ , यह दिखाया गया है कि निश्चय ही अधिक धार्मिक भी नहीं था। यह सिर्फ उनके प्रति परमेश्वर का प्रेम था जिसके कारण उन्हें परमेश्वर ने चुना और उन्हें वह भूमि दिया, और अपने शक्ति से नहीं परन्तु केवल विश्वास ही के द्वारा वे उस भूमि में हमेशा बने रह सकते थे।

जब मूसा इस्राएल के विद्रोह के इतिहास पर भाषण देता है तो पाँच जगहों पर वह ध्यान केंद्रित करता है जा इस्राएल के विद्रोह का उल्लेख करते हैं: सीनै, तबेरा,मस्सा, किब्रोतहत्तावा और कादेशबर्ने (९:१३-२५)। यहाँ इस्राएली मूर्तीपूजक बने थे: जब उन्होंने शिकायत की, जब वे लालच में पड़े, जब उन्होंने परमेश्वर की परीक्षा ली और परमेश्वर को छोड़कर फिर से मिस्र को लौट जाना चाहा (गिनती ११:१-४; ३१-३४; निर्गमन ३२; गिन.१३-१४; निर्ग.१७:१-७)।

वो कौनसी चुनौती जिसका सामना इस्राएली कर रहे थे और उस चुनौती को परमेश्वर ने सुलझाने का वादा किया।

परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों की इस चुनौती को सुलझाने के बाद इस्राएली किस लालसा में पड़ने वाले थे जिसकी भविष्यवाणि मूसा ने की वो क्या थी?

उनके पुराने पाप और विद्रोह की याद दिलाने के लिये मूसा ने इतना समय क्यों लगाया?

इस्राएल के पहले विद्रोह के लिये परमेश्वर के सामने मूसा ने कौनसी भूमिका निभाई?

हम कैसे इस्राएलियों की तरह और यीशु मूसा की तरह हैं?

अधिक जानकारी

वचन १-३: वह राष्ट्र जिसकी जगह इस्राएली लेने वाले थे वह स्वभाविक रूप से इस्त्राएलियों से मजबूत थे, जो यह जताता था कि उनपर विजय पाना और अपना गुलाम बनाना एक कठीन काम था। इसके बजाए उनका विनाश (परमेश्वर की मदद से) करना ही सही होता।

वचन ४-१७: इस्राएलियों के लिये यह सोचना कितना आसान रहा होगा कि, परमेश्वर ने उन्हें इसलिये चुना क्योंकि वो इस योग्य थे, क्योंकि वो दूसरों से अधिक धार्मिक थे। परमेश्वर यह स्पष्ट करते हैं कि लोग दुष्ट हैं, और यह कि अनुग्रह के कारण उन्होंने इस्राएलियों को चुना, याने उनकी अधार्मिकता को थोड़ा छूट देना पड़ा। तो सभी लोग एक समान हैं-अधार्मिक-फर्क सिर्फ इतना है कि परमेश्वर किस पर अनुग्रह दिखाएंगे। तो प्रश्न यह नहीं कि, "एक धार्मिक व्यक्ति को कैसे सज़ा (मारा) दी जा सकती है?" लेकिन यह कि "एक अधार्मिक व्यक्ति को कैसे बचाया जा सकता है?"।

वचन १८-२९: मूसा ने ठीक उसी तरह इस्राएलियों के लिये मध्यस्ती की जैसे परमेश्वर के सामने यीशु ने हमारे लिये की।

व्य.वि. १० 'वाचा का नवीकरण' शनिवार १२ जनवरी

अध्याय ९ में इस्राएलियों के वाचा के उलंघन का वर्णन करने के बाद, मूसा पत्थर की नई तख्तियों और वाचा का वर्णन करता है, वाचा का नवीकरण इस बात की सम्भावना व्यक्त करता है कि, इस्राएल के अयोग्यता पर परमेश्वर के अनुग्रह के कारण यह वाचा आगे भी बनी रहेगी। नई वाचा बनने के विचार की भविष्यवाणी जानने के लिये यिर्मयाह ३१:३१-३४ देखें।

वाचा के सन्दूक, उसमें रखे पत्थर के तख्तियों और जो लैवी उसे उठाए चल रहे हैं उनका वर्णन मूसा यहाँ क्यों कर रहा है?

वचन १२ और १३ में मूसा आज्ञा के मूल बातों का विवरण यहाँ कैसे करता है? कैसे यही/नई वाचा के तहत अलग है?

वचन १५ से २२ में इस्त्रालियों से परमेश्वर के प्रेम करने के तरीकों का किन उदाहरणों के द्वारा वर्णन किया गया है?

जिस तरह से परमेश्वर इस्राएलियों से प्रेम करते हैं उसी तरह इस्राएलियों को भी दूसरे लोगों से प्रेम करना था इस बात को मूसा एक दूसरे से कैसे जोड़ते हैं?

मसीही जीवन के चुनौतियों से जब आप गुज़रते हैं, तब आपके प्रति परमेश्वर का प्रेम क्या आपको प्रोत्साहित करता है?

अधिक जानकारी

वचन १४-१६: परमेश्वर तारे, ग्रह, और विश्व की रचना करने में सामर्थ्यवान थे, फिर भी उन्होने इस्राएल को चुना। उनको चुना ताकि उनपर अपना स्नेह बरसाए, ताकि वो लोग घमण्डी या अहंकारी न बनें- नई वाचा के तहत हमें भी यही करना है।

वचन १७-१९: जैसे परमेश्वर अनाथों और परदेशियों से प्रेम करता है, हमें भी वैसा ही करना है। परमेश्वर उदाहरण बनाते हैं जिन पर हमें चलना है। यहाँ पर जो गुण दिखाई पड़ते हैं वो एक ऐसे राजा का चित्र दर्शाता है जो न्यायपूर्ण और दयापूर्ण नियमों पर चलता है-परमेश्वर राजा है। इस्त्राएल के एक मानवी राजा के बारे में अध्याय १७ देखें।

वचन २०-२२: "वही तुम्हारी स्तुति के योग्य है; वही तेरा परमेश्वर है"; आज परमेश्वर के बारे में मैं क्या महसूस करता/करती हूँ? क्या परमेश्वर मेरे लिये एक उत्तेजना है, या बोरिंग और एक प्रतीदिन के कार्य के समान है?

व्य.वि. ११ 'प्रेम और आज्ञापालन' सोमवार १४ जनवरी

यह अध्याय बताता है कि वाचा के प्रति विश्वासी बने रहने के पार्श्वभूमि में उन्हें परमेश्वर से कैसे प्रेम करते रहना है; प्रेम और आज्ञा एक दूसरे पर आधारित हैं एक दूसरे अलग नहीं। परमेश्वर से प्रेम करने की पुकार और आशिषों की प्रतिज्ञा के पीछे-पीछे दूसरे सम्भव नतीजे भी आते हैं- आशिष और श्राप-पर अधिक विस्तार से आगे अध्याय २८-२९ में बताया गया है।

जबसे वो लोग मिस्र से निकले तब से लेकर अब तक जो भी चमत्कारी काम उन्होंने परमेश्वर को करते देखा उनकी याद मूसा क्यों दिलाता है? इसके कारण उनको प्रोत्साहन या मदद कैसे मिल सकती थी?

वचन ८-१५ में मूसा इस्राएलियों को प्रोत्साहन देने का प्रयत्न कैसे करता है?

वचन १६-१७ में वो उन्हें कैसे प्रोत्साहित करता है?

एक मसीह होने के नाते नया नियम किस तरह से हमें प्रोत्साहन देने का प्रयत्न करता है?

माता-पिता: कुछ दिनों पहले व्य.वि. ६:७-९ पढ़ने के बाद क्या आप अपने बच्चों को परमेश्वर के बारे में सीखा रहे हैं? व्य.वि. ११:१८-२१ पढ़ो और यदि अपने बच्चों को आप सीखा नहीं रहे हो तो निर्णय बनाओ कि उन्हें आप क्या सीखाओगे और कब।

नए नियम के अनुसार; आशिष और श्राप हमारे किये हुए चुनावों के नतीजे हैं यह कैसे

साबित होता है (वचन २६-२८)?

अधिक जानकारी

पिछले ४० वर्षों में परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिये क्या-क्या किया इस बात को बार-बार याद दिलाता है अध्याय ११। यह बहूत ही महत्वपूर्ण था कि परमेश्वर ने उनके लिये क्या-क्या किया इस बात को इस्राएली सदा याद करते रहें और आने वाली पीढ़ी को भी बताते रहें। यहाँ पर बार-बार उन आशिषों और श्रापों की प्रतिज्ञाएं भी हैं जो उन्हें आज्ञापालन करने और आज्ञा न मानने के बदले में मिलने वाले थे। एबाल और गरिज्जिम पर्वत जो पुराने शहर शेकेम के पास बसे हैं; इन पर्वतों पर वाचा के समारोह की घोषणा करना कितना महत्वपूर्ण है वो यहाँ और विस्तार से फिर से अध्याय २७ में और फिर सम्पूर्ण रुप से यहोशू ८:३०-३५ में वर्णन किया गया है।

व्य.वि. १२:१-२८ 'आराधना का एक स्थान' मंगलवार १५ जनवरी

मूसा के दूसरे उपदेश के दौरान अधिक विशिष्ट नियमों का आरम्भ यहाँ से हुआ था। आराधना का कारण था परमेश्वर ने दी हुई भूमि, और इसके प्रति अपेक्षा यह थी कि लोग उस भूमि की ऊपज लाकर परमेश्वर को चढ़ाएं।

यह राष्ट्र जिन देवताओं की पूजा करते थे क्या आपको उन देवताओं के नाम मालूम हैं? क्या आपको पता है कि इन देवताओं की आराधना का फल क्या था? यदि नहीं तो इस क्षेत्र में थोड़ा खोज़ करो।

इन राष्ट्रों के आराधना स्थलों को पूरी तरह से नष्ट करने की आज्ञा परमेश्वर ने क्यों दी?

आपके अनुसार संगठित उपासना के स्थान का **चुनाव** परमेश्वर ने क्यों किया होगा?

परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने तरीके से और अपनी इच्छा के अनुसार आराधना करने की अनुमती क्यों नहीं दी?

इस्राएलियों का आराधना करने का तरीका कैसा होना चाहिये था?

एक मसीही होने के नाते इन आराधना के दूसरे स्थानों का नाश किसके समान है?

आपके जीवन के किन बातों में आप अपने आस-पास के लोगों की जीवन शैली को अपनाने का प्रयास करते हो जिनको नष्ट करना ज़रूरी है?

संगठित आराधना के बारे में आपकी राय क्या है? अपने वेयक्तिक प्राथमिकताओं से आप कैसे निपटते हैं-जैसे गीत, पसन्द/नापसन्द आदि?

एक विशेष सभागृह में मिलकर आराधना करने के क्या फायदे हैं? क्या नुकसान हैं?

परमेश्वर की आराधना का उत्सव मनाने के उनके नज़रिये को आपनी आराधना से जोड़ो।

अधिक जानकारी

परमेश्वर, कनानी देशों के मूर्तीपूजक आराधना जिसमें वो अपने बच्चों को ज़िन्दा जलाते थे इससे अत्यन्त नाखुश और विरोध में थे (व.२९-३१)। इन मूर्तिपूजकों को मार डालने का परमेश्वर का निर्देष पहले ही अ.७:१-१६ दिया जा चुका था। अध्याय १२ में संगठित आराधना का एक विशेष स्थान नियुक्त करने के प्रसंग का हेतू यह लगता है कि उन स्थानों का उपयोग **न करें** जहाँ कनानी देवताओं की पूजा की जाती थी। पवित्र शास्त्र से बाहर कनानी धर्मों की जानकारी का एक मुख्य साधन है वो मिट्टी की तख्तियाँ जो उगारित (आज का रास शाम्रा, सिरिया)के भूखनन में पाई गईं। कनानी अनेक देवताओं की आराधना करते थे। जिन देवताओं की आराधना की जाती थी उनमें प्रधान थे: मोलेक (लै.व्य. १८:२१), जिसे बालकों की बली के लिये जाना जाता था; अशेरा (व्य.वि. १२:३), एक या एक से अधिक स्त्री देवियाँ, वृक्षों और लकड़ियों की पूजा, शायद यह अदन के बाग और जीवन के वृक्ष से जुड़ा था, और साथ ही बाल देवता भी जो कामवासना और युध्द का संरक्षक था; बाल, वर्षा और जननशक्ति देने वाला; और दूसरे बहूत सारे।

जब इस्राएली कनान में बस गए, तब कई शहर आराधना के केन्द्र बन गए; एबाल पर्वत - नियमों के पढ़े जाने के लिये; शेकिम-एक मन्दिर; शिलोह वह स्थान जहाँ यहोशू के नेतृत्व में बेदी का निर्माण किया गया, और न्यायियों के पूरे काल में आराधना का एक केन्द्र स्थान। अब तक यरुशलेम आराधना का स्थान नहीं बना था। आरधना सेवा जिसका निर्देश परमेश्वर ने दिया था उसमें, होमबलि और मेलबलि, दशमांश और उठाई हुई भेंट, स्वेच्छाबलि, गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहिलौठे लाना था। परमेश्वर विशेष रुप से लैवियों और सेवकों को (जिनके पास कोई भूमि नहीं थी) इसमें जोड़ने की आवश्यक्ता जताते हैं क्योंकि सभी परमेश्वर के लोग हैं। आराधना के स्थान पर परमेश्वर एक ऐसे वातावरण की अपेक्षा कर रहे थे जो आनन्दमय हो, यहाँ वाचा की भूमि में प्रतिज्ञाओं के पूरा होने के फलस्वरुप (व.७, १८)।

व्य.वि. १२:२९-१३:१८ 'दूसरे देवताओं की आराधना' बुधवार १६ जनवरी

यह भाग दूसरे देवताओं के पीछे चलने की लालसा या प्रलोभन से निपटता है: यह वर्णन करता है कि यह कैसे हो सकता है और इससे कैसे निपटना चाहिये।

अपने इस बात पर कि इन दूसरे देवी-देवताओं की पूजा न करें परमेश्वर क्यों इतने दृढ़ हैं?

आपके अनुसार इस्राएलियों के लिये दूसरे देवताओं की आराधना इतनी लुभावनी क्यों थी?

इन दूसरे देवताओं की आराधना के साथ कौनसे खतरे जुड़े थे?

व.५, ९-१०, १५, के प्रत्येक उदाहरण में दूसरों को अविश्वास की ओर लुभाने का दण्ड मृत्यु ही है। आपके अनुसार ये इतना कठोर दण्ड क्यों था?

मृत्यु दण्ड पाने के ज़िम्मेदार कौन हैं-और आपके अनुसार ऐसा क्यों है?

ऊपर के प्रश्न को ध्यान में रखकर, क्या आपको लगता है कि परमेश्वर इस्राएलियों पर अपना प्रेम दिखा रहे थे?

दूसरे देवताओं की आराधना करने के लिये कौनसी बात आपको आकर्षित कर सकती है?

कौनसी बात हमें यह सोचने पर मजबूर कर सकती है कि परमेश्वर का हमारे जीवन पर प्रभाव नहीं है?

इसी प्रकार आज किसी प्रचारक द्वारा भटकाए जाने के खतरे को हम कैसे टाल सकते हैं?

हमें परमेश्वर से दूर ले जाने में हमारे करीबी लोगों (परीवार आदि) का अधिक प्रभाव पड़ना आसान क्यों है?

नए नियम में परमेश्वर भक्ति को सबसे ऊपर रखने के सिध्दान्त को हमारे लिये फिर से सुदृढ़ कैसे बनाया गया है? (मरकूस ३:३१-३५; मत्ती १०:३७-३९; १कुरू.५:११-१३ देखें)।

व्य.वि. १३:१२-१४ से हमें क्या सबक मिलता है, जब हम ऐसी बातें **सुनते** हैं जो हमें चिन्तित करते हैं?

अधिक जानकारी

इस्राएलियों के परमेश्वर के प्रति प्रेम की एक इश्वरीय परीक्षा तब हुई जब एक नबी मूर्तीपूजा का समर्थन कर रहा था और साथ ही चमत्कार या अदभूत चिन्ह भी दिखा रहा था। (एक व्यक्ति जो स्वयं को नबी कहता है क्या वह सचमुच परमेश्वर की कही बात ही कहता है; यह जाँचने के लिये व्य.वि. १८:२१-२२ देखें)। एक नबी जो मूर्तिपूजा का समर्थन कर रहा था उसे मृत्यु दण्ड देना था। कभी-कभी इस बात को समझना कठिन होगा कि क्यों परमेश्वर हमारी परीक्षा लेते हैं? परमेश्वर हमारे जीवन में अतिरिक्त दबाव क्यों डालते हैं हो सकता है कि उसके कारण हम उसे छोड़ भी दें? इसके बारे में सोचने और प्रार्थना करने की आवश्वक्ता है। इसमें कोई शक नहीं कि जब हमारी परीक्षा होती है तब हमारा मकसद और हमारा विश्वास हमें और दूसरों को साफ दिखाई देता है। परदेसी देवताओं की आराधना करने का समर्थन करने वाले तीन व्यक्तियों का उदाहरण दिया गया है: शिक्षक, परीवार का सदस्य और शहर के नागरिक। शिक्षक एक अधिकार रखने वाला व्यक्ति है, जिसका प्रभाव उसके ज्ञान पर आधारित है; परीवार हमारे भावुक बन्धनों को दर्शाता है, जहाँ भावनाएँ प्रभाव डालती हैं; और निवासी (पड़ौसी) समाज में अपनी जगह बनाए रखने की चाहत हम पर प्रभाव डालती है। दूसरों को अविश्वास में ले जाने का दण्ड बड़ा मजबूत लगता है। ध्यान देना ज़रूरी है कि इस्राएल एक राजनैतिक और धार्मिक राज्य था, और वाचा से विश्वासघात देशद्रोह और स्वधर्म त्याग समान था। इस्राएली देवताओं का एक सामान्य विषय यह था कि ये ऐसे देवता थे जिनको यह राष्ट्र बहला फुसलाते थे वो काम करने के लिये जो ये करना चाहते थे।

अफवाह की बातों से कैसे निपटना है इस पर व्य.वि. १३:१२-१४ बहूत ही व्यवहारिक मार्ग बताता है। (अफवाह है वो बात जो किसी घटना, परीस्थिती, या वस्तु के बारे में एक व्यक्ति

दूसरे व्यक्ति से सुनता है जिसकि सच्चाई वह पहला व्यक्ति खुद नहीं जानता)। परमेश्वर हरएक गुट की रक्षा कर रहा है। आप जो सुनते हैं उस पर आँख मून्दकर विश्वास मत करो, परन्तु लोगों से जानकारी निकालो, **गहराई** से छानबीन और जाँच पड़ताल करो। हममें से कई बड़ी जल्दी सुनी सुनाई बातों का शिकार हो जाते हैं, न्याय कर डालते और दूसरों को नुकसान पहूँचाते हैं। दूसरों से बात करने और उनसे कठिन, छानबीन करने वाले प्रश्न पूछने का भय यदि आपके मन से निकल जाए तो आप उनका और अपना खुद का जीवन बचा सकते हैं।

व्य.वि. १४ 'शुध्द–अशुध्द भोजन और दशमांश' गुरूवार १७ जनवरी

इस विषय को आगे बढ़ाते हुए कि इस्राएली परमेश्वर के निज लोग थे, यह अध्याय कुछ ऐसे पहलुओं पर रौशनी डालता है कि परमेश्वर के पवित्र लोगों के लिये कौनसी बातें करना या न करना उचित था, जिनमें पवित्र भोजन के नियम, दशमांश और पहिलौठों के नियम थे जिनका सम्बन्ध इस्राएलियों की पवित्रता से था (व.२)।

आपके अनुसार परमेश्वर शरीर चीरने काटने के विरोध में क्यों थे?

आपको क्या लगता है यह भोजन के नियम परमेश्वर ने क्यों दिये?

इन भोजन के नियमों का धार्मिक महत्व कितना है?

दशमांश का उपयोग कैसे करना था?

दशमांश का मकसद क्या था, और इससे लोगों को क्या फायदा था?

आपके जीवन की गहरी पीड़ा से आप कैसे निपटते हैं?

क्या आपको लगता है कि आज हम जो खाते हैं वो हमारे लिये एक धर्म की बात है?

परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन आप कैसे करते हैं, विशेष कर उन आज्ञाओं का जो आपको सही नहीं लगते या फिर जिन्हें आप समझ नहीं पाते?

एक मसीही होने के नाते दशमांश देने के बारे में परमेश्वर की हमसे जो अपेक्षा है उसके बारे में आपकी समझ क्या है? क्या आपको लगता है कि आज दशमांश की आवश्यक्ता है? दूसरे शिष्य के साथ अपने विचारों पर चर्चा करो।

परमेश्वर को देने की आवश्यक्ता को नए नियम में आगे कैसे बताया गया है?

अधिक जानकारी

परमेश्वर ने खुद के अंगों को काटने पर प्रतिबन्ध लगाया क्योंकि यह गलत धार्मिक प्रथा थी। गोदना (टॅटू), कान टोचना, नाक और नाभी टोचना आदि के बारे में क्या (लै.व्य. १९:२८)? क्या यह खुद के शरीर को चीरने, काटने और आत्महत्या का विचार करने से अलग है, जो यह दर्शाता है कि जीवन की गहरी पीड़ाओं को सहने में आप असमर्थ हैं? गहरी पीड़ा से हमें कैसे

निपटना है (इब्रा. ४:१५-१६)?

भोजन के नियम (कशरूत, कोशेर) ये कुछ पंचायती निर्णय जैसे लगते हैं। कुछ लोग विवाद करते हैं कि इसका मकसद सिर्फ सुरक्षात्मक दवाईयों या फिर अच्छी सेहत से है। कुछ कहते हैं कि यह एक स्वभाविक चिन्ह है। कुछ कहते हैं कि इसका कोई विशेष स्पष्टिकरण नहीं है। जब यीशु ने सभी भोजन वस्तुओं को शुध्द करार दिया तो क्या आपको लगता है कि उस समय के यहूदियों से वह यह अपेक्षा कर रहा था कि बिना किसी विवाद के यहूदियों का जो असली भोजन है वह छोड़कर सबकुछ खाएं?

बालक को अपने ही माँ के दूध में उबालना; जाना जाता है कनानियों के उस अन्धविश्वास के लिये जो यह सोचते थे कि ऐसा करने से जादुई रूप से उनकी जननशक्ति और बच्चों की संख्या में बढ़ौतरी होगी।

व्य.वि. १५ 'छुटकारा' शुक्रवार १८ जनवरी

यह अध्याय अपना ध्यान छुटकारे की ओर ले जाता है, पहले श्रृणों से और फिर बन्धुआ मज़दूरी से छुटकारा। दशमांश के नियम(अ.१४) के बाद यह नियम आता है और उस भूमि में आर्थिक व्यवस्था को सही बनाए रखने, या संतुलित रखने के पहलू को सामने लाता है।

आपके अनुसार परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को वर्णनानुसार श्रृण माफ करने को क्यों कहा?

इस प्रकार से श्रृण माफ करने के स्वभाव से इस्त्राएल को क्या फायदा था?

उनके बीच में कोई भी गरीब न हो इस अपेक्षा का परमेश्वर के पास क्या जवाब था?

व.९ में परमेश्वर जिस स्वभाव की निन्दा करते हैं उस स्वभाव में क्या गलत था?

व.११ और व.१४ में जो उदारता दिखाने को कहा गया है वह किस बात पर आधारित थी?

व.१७, दासों पर यह निशान क्यों लगाना था?

इब्री दास की सेवा को दो मजदूरों की सेवा के बराबर क्यों समझा जाता था?

आप किन कारणों से श्रृणी बनते हो? श्रृणी होना आपके विश्वास/आनन्द पर क्या प्रभाव डालता है?

उस समय के गरीब व्यक्ति और आज के गरीब व्यक्ति का वर्णन आप कैसे करोगे?

आपके जीवन में जो **गरीब** आते हैं उनके साथ अपने पैसों का व्यवहार आप कैसे रखते हो?

दूसरों को देने में आप कैसा महसूस करते हो? यह आपके हृदय और परमेश्वर में आपके विश्वास के बारे में क्या बताता है?

देना, परमेश्वर के बारे में हमारे ज्ञान को कैसे दर्शाता है?

अधिक जानकारी

श्रृण माफ करना प्रेम का एक भाव है। श्रृण में गीरने की हमारी क्षमता को परमेश्वर जानते हैं। उसी तरह वह ये भी जानते हैं कि यह श्रृण हम पर कितना बाझ लादेगा। परमेश्वर यह भी जानते हैं कि हममें से कई देने की परिस्थिती में हैं। परमेश्वर ने हमें कितना आशिषित किया है इस बात से हमें प्रेरणा मिलनी चाहिये। इस्राएलियों को यह निर्देश शायद इसलिये दिया गया था क्योंकि परमेश्वर चाहते थे कि वो लोग परमेश्वर की तरह बनें–ज़रूरतमन्दों की मदद करने के लिये त्याग। मूसा के नियमों के अनुसार सामान्य व्यक्ति को जो सम्मान मिलना चाहिये था उस समय के समकालीन संसकृती में मानवी प्रवृती इसके बिलकुल विपरीत थी। भविष्यद्वक्ताओं से हमें यह पता चलता है कि रईसों द्वारा गरीबों का सताव; इस्राएल की अन्तिम समस्या यही थी। इस अध्याय में हम एक सिद्धान्त देखते हैं जहाँ किसी भी कीमत पर लोगों को धन इकठ्ठा करने से अपने आपको रोके रखकर जो साधन उनके पास हैं उसका उपयोग न्यायपूर्ण और दूसरों की आज़ादी के लिये करना था (उदा.व.१४)। श्रृणों और बन्धुआई से छुटकारे का विचार नबियों की किताबों और नए नियम में और ज़ोर पकड़ता है – विशेष रूप से लूका ४:१८–१९ में यीशु के कहे शब्दों को देखो, जो छुटकारे का वर्ष या प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का संदर्भ देता है।

व्य.वि. १६:१–१७ 'तीन पर्व' शनीवार १९ जनवरी

इस्राएल के तीन मुख्य पर्वों के नियमों को यह वचन नियंत्रित करते हैं।

आपको क्या लगता है क्यों इस्राएलियों को मिस्र से निकलने के समय को याद रखने के लिये कहा गया?

आपके अनुसार रोटी को "दु:ख की रोटी" क्यों कहा गया?

परमेश्वर ने इस्राएलियों को सप्ताहों का पर्व कैसे मनाने के लिये कहा?

इस्राएलियों को आनन्द मनाने को क्यों कहा गया?

यदि पर्व में कोई खाली हाथ आए, तो आपके अनुसार यह क्या बताता है?

एक मसीही होने के नाते यह यांद रखना कि हम कहाँ से आए थे(याने मसीह बनने से पहले) और अब कहाँ हैं, हमारे लिये महत्वपूर्ण क्यों है?

हमें आनन्दित रहने को क्यों कहा गया है?

परमेश्वर के आगे खाली हाथ न आना; आज हमारे लिये इसके समान बात क्या है?

फसह के पर्व और परमेश्वर द्वारा लोगों का छुटकारा इन बातों के सम्बन्ध को नए नियम में कैसे बरकरार (बनाए) रखा गया है?

अधिक जानकारी

वार्षिक पर्व मनाने का कुछ कारण था लोगों को याद दिलाना कि परमेश्वर ने उनके लिये क्या किया और क्या कर रहे हैं। यहाँ फसह का पर्व, सात सप्ताहों का पर्व और मण्डप का पर्व के बारे में लिखा गया है। फसह का पर्व (निर्ग. १२), के लिये महीने के दसवें दिन भेड़-बकरियों में से एक भेड़ को चुना जाता और चौदहवें दिन उसकी बलि दी जाती। क्यों ४ दिनों तक उस बलि होने वाले भेड़ के साथ गुजारना था? शायद एक मासूम भेड़ का मारा जाना और बलि चढ़ाया जाना लोगों को बलि के लिये चुकाए गए बड़े कीमत को समझने में मदद करता था। जब आप आत्मिक रूप से अपनी चंगाई के बारे में आभार प्रकट करते हैं तब यीशु को फसह के मेमने के समान याद करो। भेड़ को खाने के साथ-साथ अखमीरी रोटी (बिना खमीर के बनाई गई रोटी)- दु:ख की रोटी(या छुटकारा) खाना था। जब इस्राएली मिस्र में गुलामी में थे तब वो अखमीरी रोटी खाया करते थे। यह उन्हें उन कडुवे दु:खों की याद दिलाएगा जो उन्होंने सहा था। हमारे कडुवे दु:खों की याद दिलाना हमारे लिये अच्छा है क्योंकि यह हमारे बचाए जाने के आभारीपन को हमेशा ताज़ा रखने में हमारी मदद करता है। सात सप्ताहों का पर्व (फसल कटाई का पर्व, पहले फलों के दिन का पर्व या पिन्तेकुस्त के नाम से भी जाना जाता है), फसल की कटाई का मौसम पूरा हो जाने के बाद आनन्द और आभार प्रकट करने के लिये मनाया जाने वाला एक पर्व था। विशेषत: एक कटनी का पर्व, सप्ताहों का पर्व का उपयोग अनाज के दानों को धुनने से जौं की कटाई और अन्तत: गेहूँ की कटाई तक जो समय लगता है उसका वर्णन करने के लिये किया गया है। इसे सप्ताहों का पर्व इसलिये कहा जाता है क्योंकि परमेश्वर ने विशेष रुप से याकूब के बेटों को पहले फलों की कटनी से बराबर सात हफ्तों के बाद (लै.व्य. २३:१५, व्य.वि. १६:९) अगले दिन इस पर्व को मनाने को कहा। सात सप्ताह में ४९ दिन होते हैं, और अगला एक दिन इसमें जोड़ने से पूरे ५० दिन हो जाते हैं, इसलिये "पिन्तेकुस्त" नाम पड़ा (प्रेरितों २:१) जिसका अर्थ है "पच्चास"। सप्ताहों का पर्व पवित्र आत्मा के आने और कलीसिया के जन्मदिन का प्रतिकात्मक चिन्ह है। पहले फलों के बराबर ५० दिनों बाद यह घटना घटी जब परमेश्वर का पुत्र कब्र से जी उठा हुआ। फिर से जी उठने के बाद यीशु ने ४० दिनों तक अपने शिष्यों के साथ काम किया (प्रेरितों १:३); और उनके स्वर्ग पर उठाए जाने के १० दिन बाद, यरूशलेम में शिष्यों पर पवित्र आत्मा ऊंडेला गया (प्रेरितों २)।

मण्डप के पर्व के बारे में इस्त्राएलियों को तम्बू बनाने के लिये कहा गया, सुरक्षा की निशानी, जो उन्हें निर्गमन के समय के उनके अस्थायी घरों की याद दिलाता है।

व्य.वि. १६:१८-१७:१३ 'न्यायि, अधिकारी और आराधना' सोमवार २१ जनवरी

अक्षले कुछ अध्याय (व्य.वि.१६:१८-२१:९) में परमेश्वर के उन नियमों के सिध्दान्तों को विस्तार से बताया गया है जो पहले ही दस आज्ञाओं में बताए जा चुके हैं जो इस्त्राएल में न्याय को स्थापित करने और उसे कायम बनाए रखने के लिये हैं। पृथ्वी पर बसे परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की बुध्दिमत्ता और धार्मिकता का जागरूक प्रमाण बनना था ताकि दूसरे लोगों को वो परमेश्वर के पास लाएं (व्य.वि.४:५-८)। परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि यदि वे उनकी इन

नियमों को थामे रहें तो उस नई भूमि में वो सुरक्षित रह सकेंगे।

हमारी परीस्थितियाँ इस्राएलियों की परीस्थितियों से अलग हैं: व्यवस्थाविवरण भारत के नियमों की पुस्तक नहीं है! इस देश के नियमों से परमेश्वर के नियमों का क्या सम्बन्ध? यह क्या होना चाहिये?

हमारी अलग-अलग परिस्थितियाँ व्यवस्थाविवरण को देखने के हमारे नज़रिये को कैसे बदलते हैं? व्यवस्थाविवरण के सिध्दान्त क्या आज भी हमारे लिये उपयोगी हैं?

सरकार और स्थानिक अधिकारियों के प्रति हमारे विचार क्या हैं?(रोमियों १३:१-७ देखो)

क्या आपको लगता है कि मूर्तिपूजा के लिये मृत्युदण्ड (व्य.वि. १७:५ और व्य.वि. १३ भी देखें) एक अत्यन्त कठोर दण्ड है? इसकी तुलना इफिसियों ५:५-६ से कैसे होती है?

इसी प्रकार न्यायियों या याजकों की आज्ञा न मानने का अंजाम मृत्यु होगा(व्य.वि.१७:१२)। आज हम पर ये कैसे लागू होता है? किसकी आज्ञा पालन न करने में सतर्क रहना है? (इब्रा.१०:२६-२९ देखें)।

व्य.वि. १७:१ यह बताता है कि परमेश्वर सिर्फ एक सिध्द बली ही ग्रहण करते हैं। क्या आपने कभी एक दोषरहित भेड़ देखा है? शायद नहीं। फिर इस प्रकार की बली किस बात की ओर इशारा करता है?(स्पष्टिकरण के लिये इब्रा.१०:१-१४ देखें)।

अधिक जानकारी

अधिकार के नियम पाँचवी आज्ञा को बढ़ाते हैं, कि हमें अपने माता-पिता का आदर करना है। इस्राएली अफसर प्रतिकात्मक रुप से किसी गोत्र या कुल के मुख्या होते थे, ऐसे लोग जो अपनी जाति में पहले ही से आदरणीय थे।

इस्राएल की सरकार के गठन का सुझाव पहले यित्रो ने दिया, जिसने मूसा को अधिकतर काम विश्वासी पुरूषों को सौंपने और केवल कठिन मामलों को स्वयं सुलझाने की सलाह दी थी (निर्ग. १८:१३-२४)। परमेश्वर ने इस बात की पुष्टी की कि यह उसकी इच्छा थी (गिनती ११:१४-१७) और मूसा ने उसे लागू किया (व्य.वि.१:१५-१७)। इस्राएल में दो स्तर के सरकार बनने थे: स्थानिक न्यायि (व्य.वि.१६:१८-२०) जो सारे अपराधिक और दिवानी(आम लोगों के) मामलों का न्याय करते, और एक केन्द्रिय न्यायालय (व्य.वि.१७:८-१३) जो ऐसे मुकद्दमों का न्याय करता जो स्थानीय न्यायालयों के लिये कठिन होता। स्थानीय न्यायियों को वहीं के लोगों के बीच से लोगों के द्वारा (व्य.वि.१६:१८) ही चुना जाता (व्य.वि.१:१५; ३१:२८)। केन्द्रिय न्यायालय, जिसकी अगुवाई पहले मूसा ने की, अब याजक (व्य.वि. १७:९,१२) और/या न्यायी (जो लेवी थे) उनकी अगुवाई करते थे (व्य.वि. २१:५)।

परमेश्वर के प्रति लोग विश्वासी बने रहें इस बात को सुनिश्चित करना अगुवों का मुख्य काम था। तो सरकार के दो स्तरों के अनुछेदों के बीच, एक भाग है निषेध आराधना का, (व्य.वि.

१२:२१-१७:७; इसकी तुलना सही आराधना के नियमों ,व्य.वि. १२:१-१६:१७ से करो)। नियमों में मूर्तिपूजा निषेध है (दस आज्ञाओं की पहली आज्ञा को मजबूती देता है, व्य.वि. ५:७-९), और विषेश रुप से कनानी आराधना पद्धती: लकड़ी के (अशेरा) और पत्थरों के खम्बे (व्य.वि. १६:२१-२२), और सूर्य, चन्द्रमा और तारागण (व्य.वि.१७:३)। मूर्तिपूजकों को मृत्युदण्ड दिया जाता था (व्य.वि.१७:५), लेकिन इस शक्ति का दुरुपयोग रोकने के लिये, यह दण्ड पूरी छान बीन (व.४) और अनेक गवाहों की गवाही के (व.६)बिना नहीं दिया जा सकता था।

अगुवाई का दूसरा मुख्य काम था इस्राएल में न्याय की जीत निश्चित करना (व्य.वि.१६:२०)। इसका मकसद था परमेश्वर के लोगों की सुरक्षा के साथ-साथ इस्राएलियों और परदेसियों दोनों को समान रूप से परमेश्वर के चरित्र की गवाही मिले। न्याय को बढ़ावा देने के लिये और ऊपर बताए गए (यशायाह १:२३; मिका ३:११ भी देखें) न्यायालय में चल रहे मुकद्दमों को सुरक्षा प्रदान करने हेतू व्यवहारिक कदम उठाए गए जिसके अन्तर्गत किसी भी अगुवे को घूस देना निषेध था। पाप से निपटने के यीशु के निर्देश (मत्ती १८:१५-१७)व्यवस्थाविवरण १७ पर आधारित हैं, तो यही सिद्धान्त आज भी लागू हैं (२कुरू. १३:१; १तिमु. ५:१९ देखें), लेकिन ध्यान रहे कि नए नियम में इसका उद्देश्य है पुन:स्थापित करना न कि न्याय करना (गला.६:१; याकू.२:१३)।

यीशु के बाद ४ थी शताब्दी तक, कई लोग पवित्र शास्त्र के इस भाग का सही अर्थ समझ नहीं पाए, और केवल नाम मात्र मसीही सरकार जो पवित्र शास्त्र को देश के नियमों की तरह लागू करता; पुराने नियम के वैध नियमों के ढाँचे को उनके लिये फिर से बनाना चाहा। इसका नतीजा बहूत दुख:द था: कभी कभार कलीसिया ने संसार का चरित्र अपनाया, और अपनी मर्ज़ी से कलीसिया के सदस्य बनने के बजाए जबरदस्ती लोगों को सदस्य बनाकर सताए जाने के बदले खुद सताने वाला बन गया, और व्यक्तिगत परीवर्तन, संकल्प या संसार से अलगाव जैसी ज़रूरी बातों को खो दिया (मत्ती ६:२४;यूहन्ना १५:१८-१९)।

व्य.वि. १८ 'याजकों और भविष्यद्वक्ताओं के नियम' मंगलवार २२ जनवरी

आज का अनुछेद याजकों (व्य.वि.१८:१-१८) और नबियोंं (व्य.वि.१८:९-२२; और १३:२-५ भी देखें) के नियमों के बारे में है।

आपको क्या लगता है क्यों याजकों और लेवीयों को इस्त्राएली लोगों की भेंटों से मदद मिलती थी?

आज यह किस पर लागू होना चाहिये? (उदा. के लिये प्रेरितों ६:२; १कुरु.९:४-१४ देखें)।

एक नबी कितनी बार दूसरे देवताओं के पीछे चलने की सलाह देता होगा; आपके अनुसार यह कितना स्पष्ट रहा होगा? क्या होता होगा जब वे परमेश्वर का नाम लेकर झूठ बोलते होंगे? इस्राएली इसे किस रीति से परख सकते थे (व.२१-२२)? जिन भविष्यवाणियों को पूरा होने में ७० वर्ष (यिर्म.२५:११-१२; २९:१०; दानि.९:२) या ४९० वर्ष (दानि.९:२४-२७) लगे, उन भविष्यवाणियों पर यह बातें क्या असर डालती?

जब दो अलग-अलग व्यक्ति परमेश्वर के बारे में बात करने का दावा करते हैं और दोनों की बातें एक दूसरे से मेल नहीं खातीं, तो आप कैसे पता लगाएंगे कि (यदि कोई सच बोल रहा है तो) कौन सच बोल रहा है? प्राचीन इस्राएल में जैसे यह बात एक बड़ी समस्या थी, उसी प्रकार आज भी है। क्या नए नियम के किसी मार्गदर्शन को आप बता सकते हैं?

अधिक जानकारी

परमेश्वर ने लेवियों (याकूब के पुत्र लेवी के वंशज) को इस्राएल में परमेश्वर के सेवक के रुप में नियुक्त किया। उनका काम था बलियाँ चढ़ाने में याजकों की मदद करना, आराधना की अगुवाई, और झगड़े-टंटों को मिटाना (१इति. २३:२८; २इति.१९:८; २९:५; ३४; व्य.वि.२१:५)। हालांकि कुछ लोग केन्द्रीय तम्बू में सेवाकार्य करते थे उनमें से कई इस्त्राएल के दूसरे गोत्रों के बीच रहते थे (यहोशू १८:७), उनके भेंट और दशमांश से अपना निर्वाह करते (व्य.वि.१८:१; २६:१२), और स्थानीय न्यायियों और याजकों (और गाँव के कसाईयों) का काम करते।

याजक मूसा के भाई हारून के वंशज थे, इसीलिये वो भी लेवी थे। वे केन्द्रीय आराधनालय में सेवाकार्य करते थे: बली, शिक्षण और परमेश्वर के इच्छा के बारे में सलाह देना (व्य.वि. १७:९; २०:२; २१:५; २४:८)। अपने जीवन का निर्वाह वो लोगों की भेंटों से करते थे (लै.व्य.२:३; ६:१६; व्य.वि. १८:३-५), ताकि वो परमेश्वर और लोगों की सेवा के प्रती लवलीन रहें।

प्राचीन इस्राएल में नबी प्राथमिक अगुवे हुआ करते थे, और व्यवस्था और प्रशासन से ज्यादा उनका लक्ष्य धार्मिकता पर था। पहले के नबियों में अब्राहम (उत्पत्ति २०:७), मूसा (व्य. वि. १८:१५, १८; ३४:१०-१२), यहोशू (यहोशू ६:१६; १राजा१६:३४) और शमुएल थे। लोगों की धार्मिक परिस्थिती अधिकांश रुप से नबियों पर निर्भर थी, क्योंकि लोगों को भटकाने की क्षमता नबियों में थी, उदाहरण के तौर पर झूठे देवताओं (जिनमें जादू और भविष्य की बातें भी शामिल थीं) की ओर मुड़ना, या फिर परमेश्वर के नाम से झूठ बोलना (उदा. यिर्म.२८; १राजा १३)। झूठे नबियों को अपनी गलतियों का पता हमेशा नहीं लग पाता था(उदा. यिर्म.१४:१४ उन्हें बहकानेवाले कहा है)।

व्य.वि. १८:१२,१४ कारण बताता है कि क्यों इस्त्राएलियों ने अपनी भूमि का अधिकार खो दिया -परमेश्वर का न्याय। ऐसा है तो इस्त्राएलियों को न्याय भुगतना पड़ता, ध्यान रहे कि इसका इस्त्राएलियों की धार्मिकता से कोई सम्बन्ध न था (व्य.वि.९:४-६)। परमेश्वर बहकावे से घृणा करते हैं जो लोगों को स्वयं परमेश्वर की बजाए दूसरी शक्तियों की ओर मोड़ता है।

मूसा जैसे एक नबी की प्रतिज्ञा (व.१५-१९) स्पष्ट रूप से मसीह के संदर्भ में है। तेरे भाईयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा (व.१५), वह एक यहूदी होगा (मोहम्मद नहीं)। वचन १६ का हवाला व्य.वि. ५:२४-२७ से है, जहाँ इस्त्राएलियों ने उनके और परमेश्वर के बीच एक मध्यस्त की मांग की।

वचन २२ में, "डरना" या "भय खाना" नबियों की कही बात को मानने के व्यवहारिक नतीजे के प्रती आदर व्यक्त करने से है।

व्य.वि. १९–२१:१–९ 'न्यायिक नियम' बुधवार २३ जनवरी

आज हम देखेंगे मूसा के नियमों के अनुसार हत्यारे, हत्या और गवाहों के साथ कैसे निपटा जाता था। इस पूरे अनुछेद में परमेश्वर के न्याय की रौशनी चमकती है: मासूमों को बचकर और गुनहगारों को सज़ा देकर। (हम आज अध्याय २० को छोड़ देंगे और कल उसे पढ़ेंगे)।

शरणनगर बनाने का उद्देश्य क्या था? आज के ज़माने में इस जैसा क्या होगा? अन्तर क्या हैं?

इस अनुछेद में आकस्मिक घटना में मारे जाने और समझ बूझकर हत्या करने में स्पष्ट फर्क बताया गया है। जानबूझकर परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ने की सज़ा में दया नहीं दिखाई जाती (व्य.वि. १९:१३,२१)। आज यह बात हमसे कैसे जुड़ती है? १कुरू. ६:९–११, और फिर इब्रा.१०:२६–३० पढ़ो जो व्यवस्थाविवरण के इस अनुछेद के विषय में बताता है।

सीमा के पत्थरों (व्य.वि. १९:१४) की विशेषता क्या थी? क्या सिर्फ चोरी से इसका कुछ सम्बन्ध था?

न्यायालय में चल रहे मुकद्दमे के लिये परमेश्वर को एक से अधिक गवाहों की आवश्वक्ता क्यों थी? इस प्रकार के निर्देश आप पवित्र शास्त्र में और कहाँ पाते हैं?

प्रायश्चित क्या है(व्य.वि.२१:८)? आज इसका सम्बन्ध हमसे कैसे है?

अधिक जानकारी

व्य.वि. १९:१–१३ हत्यारे और हत्या के प्रबन्ध के विषय में बताता है (छठवीं आज्ञा का विस्तार करते हुए: "तू हत्या न करना")। जब किसी की हत्या होती है तब उसके रिश्तेदार उसके हत्यारे को सज़ा पाते देखना चाहते हैं। ऐसा लगता है कि उस समय शायद यह सामान्य था कि एक रिश्तेदार ("हत्या का बदला लेनेवाला", व.६) हत्यारे को मारने का काम खुद करता होगा। एक घटना में हुई मृत्यु के लिये इस प्रकार की सजा न्यायपूर्ण न होती और फिर एक के बाद एक बदला लेते जाते और यह सिलसिला कभी खत्म न होता। इसे रोकने के लिये, परमेश्वर ने कुछ शरणनगरों को बनाया जो अनजाने में मारने वाले हत्यारों के लिये एक स्वर्ग समान था, जहाँ उन्हें न्यायालय में उनका मुकद्दमा शुरू होने तक सुरक्षित रखा जाता। परन्तु यदि हत्या किसी कारण से की गई हो तो, उन्हें देशनिकाला और सज़ा दी जाती।

वचन १० और १३ कहते हैं कि "निर्दोष के खून" से वह भूमि और लोग दूषित होगें (उत्पत्ति ४:१० से इसकी तुलना करो, जहाँ हाबिल का लहू बदले की "दोहाई" है)। परमेश्वर के आशिष को पुन:स्थापित करने के लिये इन बातों से निपटना आवश्यक था। प्रायश्चित करना या गुनहगार को सज़ा (अक्सर मृत्युदण्ड) देकर भूमि को शूध्द करने का विषय पुराने नियम में बार–बार आता है(उदा. गिन.३५:३१; व्य.वि.१३:६–११; १७:७,१२)। परमेश्वर का न्याय इस बात की मांग करता है कि पाप की सज़ा भुगतना ही है–या तो गुनहगार को या फिर उसकी जगह किसी और को(व्य.वि.२१:१–४, एक निर्दोष जानवर की बली चढ़ाना आवश्यक, यीशु की ओर संकेत)।

शरणनगर एक संकेत है यीशु का जिसके पास हम दौड़े चले जाते हैं जब हमारा दुश्मन (शैतान) हम पर हमला करता है। "दुष्ट के प्रायश्चित" का दूसरा काम यह था कि जो लोग उसे देखें वो इस बात को देखें उसका अनुसरण करने का साहस न करें और दूसरे लोग इस प्रकार के बुरे उदाहरण कभी न देख पाएं। इसके अनुसार नए नियम की कलीसिया के अनुशासन से इसकी तुलना की जा सकती है, जो अपनी मर्ज़ी से पाप करने वालों को कलीसिया से बाहर कर देता है ताकि उनके उदाहरण से दूसरे भटकने न पाएं।

हत्या और गवाहों के अनुछेद के बीच व्य.वि. १९:१४ सीमाओं के पत्थरों को हटाने के निषेध में अकेला खड़ा है (आठवीं आज्ञा को बताते हुए: "तू चोरी न करना")। यह देश परमेश्वर की ओर से एक उपहार था, और जैसा लोगों को अछा लगे उस रीती से लिया या दिया नहीं जा सकता था। इस नियम के पालन के उदाहरण के लिये १राजा२१ देखें। यहूदी प्रथा ने इस नियम को एक व्यक्ति के जीवन की सुरक्षा के रूप में समझा, और इस हद तक ले गए कि स्वत्वाधिकार को इसके अन्तर्गत ले आए।

अध्याय १९ फिर से झूठे गवाहों से निपटने की याद दिलाता है (नौवीं आज्ञा, व्य.वि.५:२०), और व्यावहारिक सुरक्षा हेतू एक व्यक्ति को दोषी ठहराने के लिये एक से अधिक गवाहों की आवश्यक्ता (व्य.वि.१७:६ भी देखें)। एक ईर्ष्यालू व्यक्ति की गवाही की सम्भावना के अतिरिक्त, एक व्यक्ति को गलत आभास भी हो सकता है , उदाहरण की तौर पर, गलती से वो यह विश्वास कर बैठे कि उसने किसी व्यक्ति विशेष को घटना स्थल पर देखा है। झूठी गवाही के लिये कड़ी सज़ा (व.२०) का उद्देश्य भावी अपराधी को ऐसा करने से रोकना। जिस तरह की चोट पहूँची या जानबूझकर चोट पहूँचाई गई, सज़ा भी उसी हद तक सीमित थी (व.२१), ताकि बदले की भावना को बढ़ने से रोका जा सके। ध्यान दें कि इस बात को यीशु और आगे ले गए और किसी भी प्रकार के प्रतिशोध को निषिध्द करार दिया (मत्ती ५:३८-४२. १पत.२:२३; याकूब २:१३)। हमारे अनुसरण के लिये उन्होंने एक उदाहरण छोड़ा, वो यह कि अपराधी को सज़ा परमेश्वर देंगे यह विश्वास रखें और कभी भी बदला लेने की न सोचें।

अध्याय २१ का आरम्भ फिर से हत्या के विशय पर लौटता है, अनसुलझाए मुकद्मों से निपटने की ओर (व्य.वि. २१:१-९)। एक निर्दोष जानवर की हत्या चिन्ह था दोष को मिटाने का; गले का तोड़ा जाना यह बताता था कि जानवर अशूध्द था (निर्ग.१३:१३)। लहू बहाने का जिम्मेदार जिस जाति को सामुहिक रुप से ठहराया जाता (व.८-९), तो याजक उनकी क्षमा के लिये प्रार्थना करता (व.५)। अपराधी की लापरवाही, बताने के चिन्ह के लिये जाति के स्थानिय अगुवे अपने हाथों को धो लेते थे। व्यवस्था यह अनुमति देती थी कि अपराधी की कोई भी जानकारी न छुपाई जाए और न ही उसकी कोई मदद की जाए। ध्यान दो कि इस अधिकार का पिलातुस ने कितना गलत फायदा उठाया (मत्ति २७:२४) और जानते हुए भी एक निर्दोष व्यक्ति को उसने दोषी ठहराया। वचन ८ में, ध्यान दो कि प्रायश्चित का आधार है परमेश्वर द्वारा छुड़ाया जाना, न कि लोगों की योग्यता और निर्दोषपन।

व्य.वि. २० **'सैना के नियम'** **गुरूवार २४ जनवरी**

व्य.वि. २० में युध्द के नियमों के बारे में लिखा गया है। यह अध्याय १९ और २१ के हत्या के नियमों से अलग है: यहाँ परमेश्वर अपने लोगों के लिये लड़ रहे हैं (व.१,४; व्य.वि. ९:४-६ भी देखें), युध्द की अगुवाई याजक (व.२) और अफसर (व.५) कर रहे हैं, और साथ में सेना भी जुड़ी है (व.९), और प्रसंग है वाचा की भूमि पर कब्जा करने का।

इस्राएल से न डरने के लिये क्यों कहा गया था? (व.१-४ और भ.सं.२०:७ देखें)।

इस्त्राएली अपना आत्मविश्वास किस प्रतिज्ञा पर लगा सकते थे? (व.१,४ और उत्पत्ति १२:५-७ देखें)।

आज इस अध्याय का सम्बन्ध हम से कैसे जुड़ता है? (२कुरू. १०:३-५ देखें)।

तुलना करो "जब आप अपने दुश्मनों से युध्द करने के लिये जाते हो" (व्य.वि.२०:१) इन बातों के साथ, "अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो तुमसे बैर करे उनका भला करो, जो तुमको श्राप दें उनको आशिष दो, जो तुम्हारा अपमान करें, उनके लिये प्रार्थना करो" (लूका ६:२७-२८)। क्या यह एक दूसरे का खंडन करते हैं? आप इस बात को कैसे समझाओगे, उदाहरण के लिये एक गैर मसीही को ?

अधिक जानकारी

युध्द की तैयारी की एक विधी थी, सबसे पहले जिनका नया घर है, दाख की बारी या नवविवाहित पत्नी है; उन लोगों को युध्द से दूर रखा जाता था - सैनिकी कर्तव्य को निभाने में रुकावट पैदा करने वाली बातें-और फिर उनको भी जो डरते थे (अर्थात् विश्वास की कमी)। ऊपर से यह सेना छोटी लेकिन अधिक लक्ष्य पर अधिक केन्द्रित, लेकिन न्यायियों ७:१-८ में, सेना बिलकुल न के बराबर थी, ताकि विजय की महीमा परमेश्वर को मिले (व्य.वि.२०:४)। परमेश्वर हमें उतना मजबूत कभी नहीं बनाता कि हमें उसकी ज़रूरत ही महसूस न हो; हमारी कमज़ोरी में स्पष्ट रुप से उसका सामर्थ दिखाई पड़ता है (२कुरू.१२:१०)।

वचन १०-२० वर्णन करते हैं कि इस्त्राएल को वाचा की भूमि पर कैसे कब्ज़ा करना था। कनानियों को छोड़ बाकी सभी राष्ट्रों को परमेश्वर के लोगों के साथ जुड़ने के लिये बुलाया गया (बेगार करनेवालों की तरह, व.११), लेकिन यदि उन्होंने विराध किया तो पुरूषों को युध्द में मार डाला जाए (व.१३)। परन्तु सात कनानी देशों को पूरी तरह नष्ट कर देना था।

तीन कारण दिये गए हैं: परमेश्वर का न्याय, अब्राहम को दिये गए प्रतिज्ञा की पूर्ती कि उसके वंशजों को भूमि दी जाएगी, और इस्त्राएली द्वारा कनानियों की प्रथाओं को अपनाने का खतरा (व्य.वि. २०:१६-१८; ७:१-४; ९:४-५; उत्पत्ति १२:५-७; यहोशू ६-८ भी देखें)। अन्तिम दो वचन उन फल वाले वृक्षों को काटने से रोकते हैं, जो परमेश्वर द्वारा इस्त्राएलियों को दिये गए उत्तराधिकार के प्रतिज्ञा का एक हिसा था (व्य.वि.६:११)।

वाचा की भूमि पर विजय पाना कुछ आचार सम्बन्धी समस्या खड़ी करता है, विशेष रुप से दूसरे राष्ट्रों के बर्दाश्त न करने की कठोरता और सम्पूर्ण विनाश की आज्ञा। इस्राएल का समकालीन इतिहास इस बात को उजागर करता है कि उन्होंने इस आज्ञा का पालन नहीं किया (२इति.८:७-८), और यह कि इस्राएल को परखने के लिये परमेश्वर ने इसका उपयोग किया (न्यायि.३:४)।

केवल इस अनुछेद को पढ़ें तो हमें लगेगा कि युध्द में कोई बुराई नहीं है, लेकिन दूसरे अनुछेद इस तसवीर में अलग रंग भरते हैं। दाऊद को परमेश्वर का भवन बनाने की अनुमती नहीं थी क्योंकि वह एक योध्दा था (१इति.२८:३), और भविष्यद्वक्ताओं ने एक ऐसे समय के विषय में कहा जब युध्द समाप्त हो जाएगा (यशा.२:४; मिका ४:३), जब मसीहा (मसीह) आएगा, "शान्ति का राजकुमार" (यशा. ९:६)। तो जब यीशु आए, दुश्मन के बारे में अपने शिक्षण से उन्होंने लोगों के सोचने के तरीके को बदल दिया (मत्ति ५:४३-४४; लूका ६:२७-३०,३५; व्य.वि.२०:१)।

एक तरह से यह क्रान्तिकारी बात थी, लेकिन वास्तव में पुराने नियम में भी इस प्रकार के शिक्षण पाए जाते हैं (नि.व. २४:१७; २५:२१), और शान्ति के आदर्श का वर्णन मसीही युग के बारे में नबियों का एक विषय था। युध्द की बोली अब भी नए नियम में उपयोग की जाती है (उदा. इफि. ६:११-१७; फिलि.२:२५; फिले.२) लेकिन यह सचमुच के युध्द के बारे में नहीं पर धार्मिक युध्द के बारे में बताता है (२कुरू.१०:३-४)।

व्य.वि. २१:१०-२३ 'पारिवारिक रिश्ते: सुरक्षित जीवन' शुक्रवार २५जनवरी

अगले कुछ अध्याय (व्य.वि. २१:१०-२६:१९) सात से दस तक की आज्ञाओं के बारे में विस्तार से बताते हैं, और अधिकतर पारिवारिक और दूसरे सामाजिक रिश्तों से की बात करते हैं। अध्याय २१ के बचे हुए भाग में, युध्द के विषय की बात जारी है इसी के साथ उस नियम की भी बात हो रही है जिसका सम्बन्ध बन्दी बनाए गए "जीती हुई पत्नी" से है, जो उत्तराधिकार और परीवार के प्रबन्धों में एक स्थिती परीवर्तन लाता है।

बन्दी बनाई गई पत्नी की परीस्थिती का समर्थन हमारे लिये कितना आसान है? याद रहे कि हम हजारों सालों बाद एक अलग समाज और संसकृती में जी रहे हैं। यदि इन सुरक्षाओं के बिना हम बन्दी बनाए गए स्त्रियों की परीस्थिती के बारे में सोचें, तो क्या उस समय की इन बातों का मूल्य स्पष्ट रुप से देखने में हमें मदद मिलेगी?

पहीलौठे पुत्र को उत्तराधिकार मिले; यह प्रबन्ध इसलिये किया गया ताकि उत्तराधिकार में कोई भेद-भाव न हो। क्या आपको लगता है कि यह हर समय आसान होगा? पालक: क्या आप अपने बच्चों के साथ एक जैसा व्यवहार करते हैं, अर्थात् बिना किसी भेद-भाव के?

व्यवस्थाविवरणीय नियमों में जिस तरह बच्चों के विद्रोह से व्यवहार किया जाता था, उस प्रकार का व्यवहार आज हमारे समाज में नहीं होता। फिर भी, क्या आपको लगता है कि विद्रोही बच्चों के कारण आज नुकसान कम होते हैं? व्यवस्थाविवरण के कड़े नियमों से आपके अनुसार समाज को कितना फायदा/नुकसान पहूँचाता है?

अधिक जानकारी

यदि बन्धुआ पत्नी की बात करें तो, सामान्य परीवार के करारों को बनाए रखना असम्भव होगा, लेकिन यहाँ विवाह किये जा सकते थे। लेकिन यह भी ध्यान रहे कि, यह नियम स्त्रि के आत्मसम्मान की सुरक्षा के लिये बनाया गया: उसे पूरा एक महीना, विलाप करने की अनुमती थी, और इसके बाद उसे पूरी तरह से पत्नी का एक दर्जा दिया जाता (शायद अनेक स्त्रियों से विवाह)। और यदि पुरुष उसे तलाक देना चाहे, तब उसके साथ एक स्वतंत्र इस्त्राएली स्त्रि के समान ही बर्ताव किया जाता, न तो उसे बेचा जाता और न ही गुलाम बनाया जाता।

यह शर्त कि पहिलौठा चाहे किसी भी पत्नी से जन्मा हो उसे उत्तराधिकार का दुगना हिस्सा मिलेगा (प्राचीन पूर्व के निकट के देशों में यह एक सामान्य प्रथा थी कि, पहिलौठे को किसी भी पुत्र की तुलना में दुगना मिले) यह भेद-भाव को नहीं परन्तु न्याय को सुनिश्चित करता है। याकूब और उसके पुत्रों की कहानी देखो-वह अपनी दूसरी पत्नी राहेल के बेटे युसुफ को अधिक चाहता था, जिसका अंजाम अत्यंत कष्टदायक पारिवारिक झगड़े। व्यवस्थाविवरण पक्षपात की अनुमती नहीं देता, इस घटना में दुगना हिस्सा रुबेन को मिलने के बजाए युसुफ को मिलना एक स्तर/नमूना बनता है। यह माँ औ पहिलौठे के अधिकारों को सुरक्षित करता है, और साथ ही हेरा फेरी और दुरुपाय से बचने में मदद करता है।

वचन १८-२१: माता-पिता का आदर समाज और परमेश्वर के प्रति सही स्वभाव रखने का एक मूल तत्व है-यह एक परीवार का अन्दरुनी मामला नहीं है (निर्ग. २१:१५; लै.व्य.२०:९; व्य.वि.२७:१६ भी देखें)। हम्मुराबी नियम के तहत, पिता ने पुत्र के साथ किये बर्ताव को न्यायालय में सिध्द करना पड़ता था। यहाँ भी, इसमें बार-बार की गई गलतियाँ शामिल हैं, क्योंकि मार्गदर्शन देना और उस पर न चलना (व.१८), यह बार-बार होने वाली बात है। यह भी हो सकता है कि इस नियम की कठोरता याने यह प्राथमिक रुप में रोक-थाम के लिये थी क्योंकि वास्तव में इस प्रकार की सज़ा देने का कोई सबूत नहीं है।

मृत्यु केवल पत्थराव करके कि जाती थी। क्रूस का दण्ड अपराधी को सारे लोगों के सामने लज्जित करने के मकसद से दिया जाता था, अपराधी परमेश्वर के श्राप से श्रापित है, लोगों को यह दिखाने के लिये प्रत्यक्ष रुप से क्रूस दण्ड बनाया गया। हालांकि यह मृत्युदण्ड का एक प्रकार था, युनानी काल में क्रूसदण्ड खुले आम दिया जाता था।

व्य.वि. २२ 'व्यभिचार और जीवन की सुरक्षा' शनिवार २६ जनवरी

इस अध्याय के अधिकतम् भाग और साथ ही वह तीन अवैध "मिश्रण"(व.९-११) को सातवीं आज्ञा "तू व्यभिचार न करना" से जोड़ा जा सकता है।

वचन १-४ और व.८ भी देखो। इन सिध्दान्तों को क्या आप अपने शब्दों में लिख सकते हो?

आज का समाज बहुत अलग है-लेकिन क्या आप उदाहरण देकर बता सकते हो कि इन

सिध्दान्तों का पालन आज आप कैसे कर सकते हों?

वचन २१ और २२ देखो। व्यभिचार (या विवाह से पहले शरीर सम्बन्ध) हमारे समाज में "अपराध" नहीं है। क्या आप कोई कारण बता सकते हो कि व्यवस्थाविवरण में व्यभिचार को इतनी गम्भीरता से क्यों लिया गया है?

वचन १३-२९ पढ़ो। क्या आप ऐसी परिस्थितियों के बारे में सोच सकते हो जहाँ इन नियमों का पूरी तरह से पालन न हो सके? तो फिर क्या किया जाए?

वचन १३-२९ में, क्या आप देख सकते हैं कि यहाँ पर केवल पुरुषों के बारे में चिन्ता जताई जा रही है? यदि आप स्त्रियों के बारे में चिन्ता देखें तो यह चिन्ता किस प्रकार की है इसका वर्णन आप कैसे करेंगे?

फिर, हम इन नियमों के दिये जाने के हजारों सालों बाद एक अलग समाज और संस्कृति में रहते हैं। इन नियमों को समझने में इस बात का क्या असर पड़ सकता है?

आज हम इन नियमों का उपयोग कैसे कर सकते हैं?

अधिक जानकारी

वचन १-४, ६-८ में के नियम जीवन जीने और जीना कायम रखने की चिन्ता बताते हैं; किसी इस्राएली भाई की मदद करने का कर्तव्य कार्य करने की ओर एक सकारात्मक कर्तव्य है, न कि सिर्फ नुकसान से बचने का।

स्त्रि पुरुष के और पुरुष स्त्रि के कपड़े पहनने पर बन्दि (व.५) का कारण शायद समलिंग सम्बन्धों के कुछ तरीकों और/या कनानी और मेसोपोटामिया देशों के आराधना की विशेष प्रथा से जुड़ा है। यहाँ पर अधिक ध्यान देनेवाली बात यह है कि लैंगिक अपराधों को परमेश्वर और समाज के खिलाफ किये गए पापों की तरह देखा जाता था, और इसके लिये मृत्यु दण्ड दिया जाता था-जो आज हमें बहुत कठोर जान पड़ता है। उदाहरण के लिये, समकालीन हम्मुराबी नियम, एक पती को अपनी विश्वासघाती पत्नी के मृत्यु दण्ड को रोकने का अधिकार देता है, लेकिन व्यवस्थाविवरण इसकी अनुमती नहीं देता। वो व्यक्ति जिसने अपनी इच्छा से शरीर सम्बन्ध किया है-वो चाहे एक जवान युवती हो या फिर एक विश्वासघाती पत्नी-उनको मृत्यु दण्ड ही दिया जाता; एक जवान युवती के लिये वेश्या शब्द का उपयोग अत्यन्त कठोर है, और उसके परीवार की भी बदनामी होती है।

जब दूसरे प्राचीन पूर्वी राष्ट्रों के व्यभिचार सम्बन्धी नियम जमीन जायदाद के नियमों के समान लगते और गुलाम और स्वतंत्र स्त्रि के बीच भेद या फर्क करते थे, लेकिन सिर्फ व्यवस्थाविवरण में ही स्त्रियों की परीस्थितियों की चिन्ता की जाती; न्यायियों का कर्तव्य स्त्रियों के सम्मान की रक्षा करना था (उदा. व. १८-१९)। गलत रीती से दोषी ठहराई गई नई पत्नी को दुगनी सुरक्षा मिलती, क्योंकि उसका पती जिसने उसे अस्विकार किया उसे तलाक नहीं दे पाता था; साथ ही जवान स्त्रि जिसका नाम उछाला गया, विवाह के द्वारा उसका सम्मान और आर्थिक परिस्थिती को

सुरक्षित किया जाता (व.२८-२९), हालांकि इसके प्रति उसे कैसे महसूस होता है इस बारे में कुछ नहीं कहा जाता। ध्यान रहे कि कुछ भी हो इस प्रकार का विवाह आवश्यक नहीं है (निर्ग.२२:१७)।

व्य.वि. २३ 'सदस्यता और जनसमुदाय की अर्थ व्यवस्था' सोमवार २८ जनवरी

व्य.वि. २३:१-८ आपसे क्या कहता है, कौन प्रभु के धर्मसभा का सदस्य बन सकता है (और कौन नहीं)? इसका सम्बन्ध नए नियम के परमेश्वर के राज्य की तस्वीर से कैसे जुड़ता है, इसके बारे में सोचो, और नए नियम की तस्वीर में क्या अलग है?

अपने लोगों की पवित्रता के लिये परमेश्वर कितनी चिन्ता करते हैं (व.९-१४)? कठिन परिस्थितियों में हमारी पवित्रता को बनाए रखने में हम कैसे हैं?

वचन १९-२० और पीछे व्य.वि. १५:१-१८ देखो। फिर वचन २४-२५ देखो। यह बातें आपको उस समुदाय के स्वभाव के बारे में क्या बताते हैं; जिसे परमेश्वर स्थापित करना चाहते थे? इस अनुछेद से हम, पैसों से लगाव और उसे खर्च करने के हमारे विचार, के बारे में क्या सीख सकते हैं?

वचन २१-२३ देखो। परमेश्वर से वादा करने के बारे में यह क्या सिखाता है?

अधिक जानकारी

व.१-८ यह यहोवा के धर्मसभा में प्रवेश के नियम बताता है। जिनको प्रवेश करने की अनुमती नहीं है ये वो लोग हैं जिनके शरीर के अंग दूसरे देवताओं की आराधना करने के कारण काटे गए। अवैध रिश्ता अपने परीवार या निकट सम्बन्धी के साथ या अमान्य रिश्ते में किये व्यभिचार से पैदा हुए बच्चे के बारे में; या धर्मकृत्य जानकर वैश्या से किये शरीर सम्बन्ध से पैदा हुए बच्चे के बारे में बताता है। मोआब और अम्मोन अस्विकार किये गए क्योंकि उन्होंने इस्राएल की यात्रा में उनकी मदद करने से इनकार करके परमेश्वर के मकसद का प्रतिरोध किया। एदोम, जिसके बारे में कहा जाता है कि वो करीबी रिश्तेदार था, और मिस्र, जिसने युसुफ के समय इस्राएलियों का अतिथी सत्कार किया, के पास धर्मसभा में प्रवेश करने का सही कारण था। ध्यान रहे जैसे हम पुराने नियम से गुज़रते हैं, तो प्रवेश पर रोक जन्म से ही लागू हो जाता है; उदा. मोआबी स्त्रि रूत का यीशु के साथ खून के रिश्ते में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दूसरे देशों के धर्मसभा के साथ जुड़ने की भविष्यवाणी यशायाह में है। लेकिन सिर्फ नए नियम में ही चुनाव की कल्पना को फिर से बनाया गया जिसमें खून के रिश्ते और उत्तराधिकार का कोई महत्व न था।

वचन २१-२३: मन्नत मानना आवश्यक नहीं था, पर यदि मानी जाए, तो पूरा करना आवश्यक था (गिन.३०:२-१८, मत्ती ५:३३-३७ भी देखो)। परमेश्वर के कहे शब्द विश्वासयोग्य हैं: मन्नत को पूरा न करना वाचा की आत्मा के विरुध्द है। अध्याय का अन्त उस देश के आर्थिक जीवन के साथ समाप्त होता है, जो समाज के आपसी चरित्र की सहकारीता का वर्णन करता है। यह एक ज़बरदस्त सामाजिक-अर्थ व्यवस्था है: धन सम्पत्ति का उपयोग करना याने भाईचारे का

एक भागा होना था। वचन १९-२०: ब्याज न लेने के यह नियम प्राचीन पूर्वी देशों की एक अनोखी बात थी। यह साधारण रूप से लागू की गई लेकिन विशेष रूप से गरीबों की इससे मदद होगी। व्य.वि. १५:१-१८ भी देखो, जहाँ इस्राएलियों को ज़रूरतमन्दों की मदद करने को कहा गया है, चाहे इसमें पैसा वापस न मिलने का धोखा ही क्यों न हो। दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करने की आवश्वक्ता आर्थिक ब्याज लेने से कहीं बढ़कर थी। वचन २४-२५: अपने किसी पड़ौसी की ऊपज में से खाने की छूट, फिर इस बात की ओर इशारा करती है कि फलती-फूलती वाचा की भूमि सभी लोगों के लिये यहोवा का एक वरदान है। सभी एक दूसरे के प्रति आभारी हैं, लेकिन नियम भंग न हो इस कारण इसमें कुछ प्रतिबन्ध हैं।

व्य.वि. २४ 'इस्राएली समाज और यहोवा के साथ वाचा' मंगलवार २९ जनवरी

अध्याय विवाह की सुरक्षा से आगे, पारिवारिक जीवन की सुरक्षा और गरीबों और असहाय लोगों की सुरक्षा की ओर बढ़ता है। यहोवा के लोग होने का क्या अर्थ है, इसके बारे में बात करता है।

जब आप इन नियमों के बारे में पढ़ते हो, विशेष कर व.१०-२२, तो आपको क्या लगता है यह समाज किस प्रकार का रहा होगा? इसका वर्णन करने के लिये आप किन शब्दों का उपयोग करोगे?

वचन १६ देखो। पाप के प्रति ज़िम्मेदारी के बारे में यह आपको क्या बताता है? (ध्यान रहे कि पवित्र शास्त्रिय संसार में परीवार के एक व्यक्ति के पाप का दण्ड सारे परीवारों को दिया जाता था)।

आपके अनुसार कौनसी बात लोगों को नियमों का पालन करने का प्रोत्साहन देता था? वचन ४,१८ और २२ देखो। व.९ भी देखो। परमेश्वर के स्तर के अनुसार जीने के लिये कौनसी बात आपको प्रोत्साहन देती है?

वचन १-४ में, क्यों, तलाक और फिर से विवाह करने की अनुमती दी गई, क्या आपको लगता है कि अपने पहले पती से फिर से वह विवाह न कर पाए इसलिये उसे "अशुध्द" घोषित किया जाता था? आपके अनुसार इस नियम के पीच्छे क्या कारण था?

यह नियम परमेश्वर के चरित्र के बारे में कौनसी बातें साम्हने लाते हैं?

अधिक जानकारी

वचन १०-१८ को एक "सामाजिक रौशनी" बताया गया है (यहे.१८:५-२० से तुलना करो)। वचन १०-१३ पड़ौसी के प्रति एक मानवीय आदर दर्शाता है, पड़ौसी के घर में न घुसना, न ही उसका कपड़ा रात भर अपने पास रखना, ताकि परमेश्वर के साम्हने सही ठहर सको। वचन १४-१५, गरीबों और मजदूरों का सताव पुराने नियम में एक बड़ा सामाजिक पाप माना जाता था, और लैव्यव्यवस्था में भी इसका उल्लेख है, नबियों और ज्ञान का साहित्य। आर्थिक लेन-देन में

पड़ौसियों और परदेशियों पर दया की भावना होना आवश्यक था। यहाँ गरीबों के प्रति जो चिन्ता बताई गई है उसका सम्बन्ध पीछे व्य.वि.१५:१-१८ के साथ है; व्यवस्थाविवरण के अनुसार इस्त्राएली समाज में "गरीब" तपके के लोगों का समूह हमेशा के लिये न बना रहे ऐसा बताया गया है।

वचन १७-१८ यह नियम आगे, अनजाने लोगों और परदेशीयों की सुरक्षा प्रदान करते हुए, स्पष्ट रुप से यह बताता है कि इस नियम के अन्तर्गत यह लोग भी शामिल हैं। इसी प्रकार अनाथ और विधवाओं के लिये भी बताया गया। वचन १९-२२: सामाजिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को तीन प्रकार के अनाजों, तेल और दाखरस में कुछ हिस्सा दिया गया है। यह २३:२४-२५ के समान है; याने, वाचा के समुदाय के सभी सदस्य भूमि के आशिषों, जो यहोवा का वरदान है बराबर के भागीदार होंगे, और यह बात कोई मायने नहीं रखता कि व्यक्तिगत रूप से वो भूमि उनकी है या नहीं।

वचन १-४: पुराने नियम में त्यागपत्र या तलाक पर केवल यही एक नियम है; तलाक दिये जाने की कल्पना थी; लेकिन इसे सही तरीके से लागू और सीमित करने का काम यह नियम करता है; एक वैध प्रमाणपत्र की मांग (जिसके बाद पत्नी फिर से विवाह कर सके)। इस विधि से स्त्रियों को एक ऐसी संसकृति से सुरक्षा प्रदान की गई; जिसमें मामूली कारणों के लिये तलाक (पती द्वारा) दे देना आम बात थी। नियम नहीं कहता कि तलाक देने की अनुमती है; परमेश्वर के स्तर और नज़रिये के लिये, उत्पत्ति २:२४; मलाकी २:१६ देखो।

यहाँ, वचन ४ स्पष्ट करता है कि यदि उसकी पहली पत्नी का उसके दूसरे पती से तलाक हो जाता है या फिर वह विधवा हो जाती है तो वह फिर से अपनी पहली पत्नी से विवाह नहीं कर सकता। कारण शायद यह हो सकता है कि; पहले पती से फिर से विवाह, याने सच जानते हुए भी दूसरे विवाह को व्यभिचार समझा जाता। ध्यान रहे, परमेश्वर भी चिन्ह के रुप में अपने विश्वासघाती और अशुध्द पत्नी, इस्त्राएल को फिर से अपनाता है (यिर्म. ३:१; होशे ३:१)।

व्य.वि. २५ 'न्याय के प्रति वचनबध्दता' बुधवार ३० जनवरी

वचन १-३ पढ़ो। आपको क्या लगता है, सज़ा ४० कोड़ों तक ही सीमित क्यों थी? कारण क्या दिया गया है? क्या आपको लगता है कि इस नियम एक सिध्दान्त है जिसका उपयोग हम आज भी कर सकते हैं?

वचन १३-१६ देखो। बेईमानी के कारण सबसे ज्यादा नुकसान किसका होगा, आपको क्या लगता है? ईमानदारी के लिये क्या प्रतिज्ञा या ईनाम है?

आपके अनुसार वचन ४ के पीछे क्या सिध्दान्त है? इसका सम्बन्ध व्य.वि.२३: २५-२६; २४:१९-२२ से कैसे जुड़ता है?

वचन ५-१० देखो। विधवा और उसके मरे हुए पती के भाई के बीच विवाह (याने प्राचीन यहूदी प्रथा) का क्या मकसद था, आपको क्या लगता है? किसी भाई का इस बात से

इनकार करना समाज की नज़रों में इतना कठोर क्यों माना जाता था?

अधिक जानकारी

वचन १-३: ध्यान रहे कि इसका मकसद स्पष्ट रूप से भाई के आत्मसम्मान को बनाए रखना था; और इससे उसकी मृत्यु भी रूकती थी। आगे यह भी सुनिश्चित हो जाता कि सज़ा न्यायियों के साम्हने दी जाए। यह भी ध्यान रखो कि सभी के साथ एक समान व्यवहार किया जाता था: दूसरों की तुलना में गुलामों के लिये अलग या इससे कठोर सज़ा नहीं थी।

पती के भाई या प्राचीन यहूदी विवाह प्रथा के लिये उत्पत्ति ३८ भी देखो। निर्ग.२७:८-११ इस प्रकार के विवाहों से इनकार या सन्तान पैदा न होने के लिये दूसरा विकल्प देता है-और, हाँ, इनकार करने के प्रती एक प्रेरणादायक बात को भी उजागर करता है, यह कि, यदि स्वर्गवासी भाई का कोई वारिस नहीं है तो दूसरा भाई जो जीवित है उसकी सम्पत्ति अपने आप बढ़ जाएगी। महत्व इस बात को निश्चित करने में है कि स्वर्गवासी व्यक्ति और उसकी पत्नी का वंश आगे बढ़े। प्राचीन यहूदी पुनर्विवाह की प्रथा शायद इसलिये भी बनाई गई थी कि उस विधवा को परीवार से बाहर विवाह करने से रोका जा सके, ताकि धन-सम्पत्ति परीवार में ही बनी रहे। यह एक व्यवहारिक नियम है, विधवा के कमज़ोर परिस्थिती का ध्यान रखने, और स्वर्गवासी व्यक्ति का आदर बनाए रखने की एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ती इसलिये यह सिध्दान्त बनाया गया। सारे लोगों के साम्हने पती के भाई के मुंह पर थुंकना एक बहुत ही शर्मनाक बात थी।

वचन ४: गरीब और असहाय लोगों की तरह बैल को जो चाहिये वो ले सकता था। १कुरू.९:९ भी देखो, जो इस सिध्दान्त को मसीही सेवाकार्य करनेवालों के लिये भी लागू करता है। गलत मापों (व.१३-१६) के लिये, लै.व्य. १९:३५-३७ भी देखो। नबी आमोस (८:५) और मिका (६:१०-१२) इस बारे में बात करते हैं। फिर, गलत माप, गरीब और असहाय लोगों के सताव में मदद करने जैसा है।

वचन १७-१९: मिस्र से बाहर निकलने पर इस्राएल का सबसे पहला शत्रु अमालेकी थे (निर्ग.१७:८-१५)। व्य.वि. २५:५-१२ इस बात को सुनिश्चित करता है कि इस्राएली इस बात को कभी न भूलें। २शमूएल ७:१ भी देखो-अमालेकी उनके आखिरी शत्रु थे- उनका राष्ट्र भी बाकी न था, जैसा १इति.४:४३ में बताया गया है। इन विशेष नियमों के अन्त में यह वचन इस बात की याद दिलाते हैं कि जिस समाज की वो रचना करने जा रहे थे उसे बाहर और भितर दोनों तरफ से खतरा था।

व्य.वि. २६ 'गोत्र, विश्वास और वचनबध्दता' गुरूवार ३१ जनवरी

इस अध्याय में, दो विशेष समारोहों के बारे में बताया गया है: पहला समारोह फसल की पहली उपज की भेंट, और दूसरा तीसरे वर्ष दिया जानेवाला दशमांश। यह समारोह, परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिये क्या-क्या किया यह याद दिलाने के लिये अतिआवश्यक थे। वचन ५-१० इस्राएलियों के मूल को एक राष्ट्र के रूप में बताता है। परमेश्वर ने उन्हें बहुत दूर तक लाया था।

यदि आप एक शिष्य हैं तो, परमेश्वर के राज्य में अपने प्रवेश के बारे में सोचो (या यदि आप शिष्य नहीं हैं तो आज तक के आपके सफर के बारे में सोचो)। आप अपने धार्मिक मूल और परमेश्वर की ओर अपने मार्ग को कैसे बताओगे?

यदि आपने अपने बपतिस्मा के समय इस प्रकार के वाक्य बनाए होते, तो वो क्या कहते?

परमेश्वर ने हमारे लिये क्या-क्या किया आज, अपने खुद को यह कैसे याद दिलाते हैं?

पलट कर परमेश्वर को आभार प्रकट करना और इस बात को याद रखने के लिये आज शिष्यों का आभार प्रकट करना, नए नियम का यह सिध्दान्त कैसे लागू होता है?

अधिक जानकारी

अध्याय १२ और २६ व्यवस्थाविवरण के विशेष नियमों के चारों ओर एक ढाँचा तैयार करके हैं। यह दोनों अध्याय इस्राएल के वाचा की भूमि में प्रवेश करने के बाद एक विशेष स्थान पर परमेश्वर की आराधना करने के महत्वपूर्ण बात का बयान करते हैं। भेंट चढ़ाते और कबूली करते और बोलते हुए, आराधना करने वाले परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कर रहे हैं और साथ ही उन आज्ञाओं को मानने की शर्तों को भी अपना रहे हैं। यह व्य.वि.१२:५-७, ११-१३ की बातों को पूरा करता है- लाने, खाने और आनन्द मनाने की ज़रूरत।

वचन ५-१० इस्राएल के मूल को एक राष्ट्र का दर्जा देता है। उनके बेघर होने और भूमि का उपहार यह दो बिलकुल विपरीत बातें हैं, अधिकाई से होना और कुछ न होना, और इस्राएलियों की दोहाई के जवाब में यहोवा की प्रतिक्रिया पर ज़ोर दिया गया है। उन्हें एक सुरक्षित जगह पर पहुँचाना था-उनका खुद का देश-जो परमेश्वर के विश्वासयोग्य होने की एक गवाही है। इन वचनों के अन्त में, विशेष कर व.११ में, परदेशीयों को भी उनके साथ जोड़ने की बात याद दिलाई गई है, याने कि, दूसरों को जनसमुदाय से जुड़ने की अनुमती।

अध्याय २६ का वर्णन एक टीकाकार (कॉमेन्ट्रेटर) ने "एक घोषणाओं का अध्याय" कहकर किया। इस्राएल यहोवा को अपना परमेश्वर स्वीकार करती है (व.३,५-१०), उपासक घोषणा करता है कि उसने आज्ञापालन किया है (व.१३-१५) और मूसा घोषणा करता है कि यहोवा और इस्राएल एक जोड़ी के समान वाचा को मानते हैं (व.१७-१८)। यह वाचा के प्रति वचनबध्दता की व्याख्या है, अर्थात् एक औपचारिक घोषणा।

पहली उपज लाने का हवाला कहीं और सप्ताह के पर्व से सम्बन्धित है (गिर्ग.२३:१९; ३४:२६; लै.व्य. २३:१०; गिन.२८:२६)। यह कृषी प्रधान जीवन शैली, की एक नई शुरूआत थी; अब तक इस्राएलियों का अस्तीत्व घुमक्कड़ों की तरह था, उनके जानवरों और परमेश्वर द्वारा उनकी ज़रूरतों को पूरा करने पर निर्भर था।

अध्याय का अन्त व.१८-१९ के साथ होता है, विशेष नियमों को पूरा करने का एक ऊच्च कोटी का शोभाएमान स्थान: परमेश्वर इस्राएल को उसकी आज्ञा पालन "तुम्हारे पूरे मन और पूरी

आत्मा से" करने वाले विशेष लोगों के रुप में सम्बोधित करता है, और उन्हें सब जातियों में प्रतिष्ठित कर उनको प्रशंसा और आदर दिलाने की प्रतिज्ञा करता है, एक ऐसी जाति जो परमेश्वर के पवित्र लोग कहलाएंगे।

व्य.वि. २७ 'वाचा के आशिषों और श्रापों को अंकित करना' शुक्रवार १ फरवरी

यह अध्याय दूसरे दो अध्यायों के बीच मूसा के उपदेशों को दाहराता है, मूसा के साथ-साथ धर्मवृध्दों और याजकों की वर्णनात्मक बातें इसमें पाई जाती हैं, जो भविष्य में वाचा के पुष्टिकरण के विषय में विशेष निर्देश देता है, जो शेकेम में होना था। ध्यान रहे कि अन्ततः जब इन आज्ञाओं का पालन किया जाएगा तब मूसा वहाँ न होगा।

वचन १-८ में, आपको क्या लगता है, क्यों पहले से ठहराई गई किसी खास जगह पर ही नियमों को अंकित करने का आदेश दिया गया?

पवित्र शास्त्र के आपके ज्ञानानुसार आप क्या सोचते हैं कि लोगों के ऐसे कौनसे ऐसे व्यवहारिक पर्याय थे जिनके लिये उन्हें अंकित किये गए नियमों को पढ़ना/याद करना था?

पत्थर पर लिखी आज्ञाओं के द्वारा कानसी क्रिया करने की सलाह दि गई और वो एक दूसरे को कैसे सराहते हैं?

अलग-अलग पापों के लिये १२ श्रापों की श्रृंखला बताई गई है। आज का समाज किन बातों को गम्भीर मानता और किन बातों को गम्भीरता से नहीं लेता, इस पर यदि विचार करें, तो क्या इस सूचि में लिखी कोई बात आपको चकित करती है? परमेश्वर इन बातों को एक साथ क्यों रखेंगे?

इन श्रापों के पीछे परमेश्वर की कौनसी प्राथमिकताएं हैं?

अधिक जानकारी

जैसे हम इस और आगे के अध्यायों को देखेंगे, तो हमें उन घटनाओं को देखना होगा जो इन आगे आनेवाले प्रसंगों में दिखाई पड़ती हैं: पहला, मूसा अपने मौत के करीब है, जिसके बाद, जैसा परमेश्वर ने तय किया उसके अनुसार अगुवाई की कमान यहोशू को सौंपी जाएगी। दूसरा, निकट पूर्वी राष्ट्रों के सामंति राजाधिराज के संधिपत्र जिसमें आशिषों और श्रापों को निर्धारित किया गया, शामिल थे और साथ ही संगती भोजन और समारोह; व्यवस्थाविवरण में इस बात को अपनाए जाने को हम देखेंगे।

यह सच्चाई कि इस समारोह के लिये एबाल पर्वत का चुना जाना और तराशे हुए पत्थरों पर नियमों को अंकित करना; इसका कारण इस क्षेत्र से जुड़ा इतिहास हो सकता है। अब्राहम को यह प्रतिज्ञा मिलने के बाद कि, वह उस देश का उत्तराधिकार पाएगा, अब्राम ने कनान देश में गरिज्जीम और एबाल पर्वतों के बीच शेकेम पर्वत पर पहली वेदी बनाई (उत्पत्ति १२:६-७)।

और वास्तविक रूप में एबाल पर्वत वाचा की भूमि के बिलकुल मध्य में स्थित था, इस बात को ध्यान में रखा गया कि अनेक गोत्रों ने पहले ही से इस भूमि पर अधिकार कर रखा था और यर्दन नदी के चारों ओर बची हुई भूमि पर कब्ज़ा करने की क्रिया लगातार जारी रहने वाली थी। व्य.वि.११:२६-३२ भी इस समारोह का पूर्वानुमान लगाता है।

प्राचीन निकट पूर्वी देशों में किसी भी महत्वपूर्ण करारनामे को पत्थरों पर अंकित करना सामान्य बात थी। ध्यान रहे दो बार इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि परमेश्वर महान गुणों से भरी यह भूमि देंगे (दूध और मधु की नदियाँ)। महत्व इस बात का है कि यह भूमि परमेश्वर ने दी। याने, इस भूमि को कमाया नहीं गया, हालांकि उन्हें युध्द करके इस भूमि को लेने के लिये कहा गया।

इन नियमों को कैसे अंकित करना है इस बात का नुसखा देखकर लगता है कि यह एक सामूहिक स्मृतिपत्र है। और भेंट की वेदियां शायद आराधना के एक स्थान को दर्शाते थे। बिना तराशे हुए पत्थरों पर नियमों को अंकित करने (निर्ग.२०:२४-२५) की सावधानी शायद इसलिये ली गई कि मूर्तिपूजा के सलाह से बचें, क्योंकि आराधना की एक वस्तु आसानी से आराधना करने की वस्तु बन सकती है (लै.व्य.२६:१ देखो)।

वचन ९ में, लैविय याजक, मूसा के साथ मिलकर औपचारिक रूप से जैसा व्यवस्थाविवरण २६:१७-१९ में लिखा है, लोगों को परमेश्वर के साथ वाचा बान्धने के लिये बुलाकर, शायद यह संकेत दे रहे थे कि प्रभु की वाचा का सन्दूक निकट ही है। गोत्रों में बंटे हुए लोगों को, आगे शेकेम में भविष्य में होने वाले एक समारोह में बुलाया गया जहाँ आशिषों और श्रापों के उत्तराधिकार को वाचा के नवीकरण के एक भाग के रूप में बताया गया। आशिष गरिज्जीम पर्वत से और श्राप एबाल पर्वत से घोषित किये जाते थे, शायद इसलिये कि भूगौलिक रूप से यह पर्वत एक घाटी का भाग थे जो एक बड़े रंगभूमि की तरह था, जहाँ बसे हुए लोग सामने वाले पर्वत से की गई घोषणाओं को आसानी से सुन पाते होंगे।

श्रापों के विवरण का आरम्भ मूर्तिपूजा के पाप से होता है, ऐसे मूर्तियों की पूजा जो सिधे परमेश्वर से मुकाबला करते थे। आगे यह अनेक गम्भीर लैंगिक पापों से निपटता है क्योंकि इनसे परीवार- जो समाज के रीड़ की हड्डी है- का ढाँचा तितर-बितर हो जाता है। अन्त में वह श्रृंखला आज्ञा पालन न करने के पाप की घोषणा के साथ समाप्त होता है, इस बात पर ज़ोर देकर लोगों को बुलाता है कि परमेश्वर के प्रति वो अपना प्रेम व्यवहारिक और सक्रिय रूप से उसकी आज्ञा पालन करके दर्शाएं। बारह श्रापों में के पहले और आखीरी श्राप में व्यवस्थाविवरण के शिक्षण का सारांश है: केवल परमेश्वर की आराधना करो मूर्तियों की नहीं, और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानो (व्य.वि.४ देखो)।

व्य.वि. २८:१–२९:१ 'दो रास्ते' शनिवार २ फरवरी

इस्त्राएलियों के प्रतिदिन के जीवन में किस हद तक यह प्रतिज्ञाएं काम करती हैं? क्या आप पवित्र शास्त्र के इतिहास के आशिषों और श्रापों के उन समयों के बारे में सोच सकते हो जो परमेश्वर ने इस अध्याय में पूरे किये हैं?

इस अनुछेद के अनुसार आशिष और श्राप पाना किन बातों पर निर्भर होते थे?

आशिष और श्राप के भागों की लम्बाई की तुलना के बारे में आपके विचार क्या हैं? आपको क्या लगता है यह ऐसा क्यों है?

यहाँ किन वाचाओं की बात की गई है? वाचा के इस नवीकरण का कहाँ तक फायदा होगा (आखिर के कुछ अध्याय या और विस्तारित)?

क्या आपको कोई ऐसा समय याद है जब किसी ने आपको कड़ा परन्तु सही चेतावनी दी? उस समय आपको कैसा महसूस हुआ इसके बारे में सोचो, और पिछले समय के मुकाबले आज इसके बारे में आपको कैसा महसूस होता है?

अधिक जानकारी

इस अध्याय में, मूसा जब मोआबियों से बात कर रहा है, तो ऐसा प्रतित होता है कि यर्थात् पलटकर मूसा की ओर आया है। यहाँ (और लैव्यव्यवस्था में भी) जो आशिष और श्राप बताए गए हैं, यह परमेश्वर के साधन हैं इस्त्राएलियों पर अपनी वाचा लागू करने के–पुराने नियम के सारे इतिहास में नबियों ने बोलकर और लिखकर आशिषों और श्रापों को बार–बार दोहराया है।

आशिषों को परमानन्द के एक समूह के रुप में दिया गया है जो इस्त्राएल में जीवन के हर पहलू को इसमें शामिल करता है–परीवार, कृषी, धार्मिक, शारीरिक, योजना और उद्योग आदि। जैसा पहले अध्यायों में कहा गया, ज़ोर इस सच्चाई पर दिया गया है कि वह परमेश्वर ही है जो सब आशिषें देता है। जब इस्त्राएल ने इन बातों को महत्व नहीं दिया, तब आशिष पाना निर्भर था उनकी आज्ञाकारिता और परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति उनकी निष्ठा पर। लोग अनेक प्रकार से प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते थे, लेकिन मसीही होने के नाते आज जो प्रतिध्वनी हमें सुनना है वो यह है कि जहाँ कोई योग्यता नहीं थी फिर भी वहाँ परमेश्वर की इच्छा से मिले आशिष को पहचानना, वे (और हम) परमेश्वर के प्रेम को देख सकते हैं और आज्ञापालन में प्रोत्साहन पा सकते हैं, इस बात को समझकर कि नियम उनके भले के लिये थे। दु:ख की बात यह है कि, हम इतिहास से यह देख सकते हैं कि कुछ लोगों को छोड़, अधिकतर लोगों ने परमेश्वर के प्रेम को नहीं पहचाना और इसके फलस्वरूप एक विश्वास भरा जीवन न जी सके।

वचन १५ से आगे, और ४५ वचन हैं इनमें सबसे पहले ध्यान देने वाली बात एक कड़ी चेतावनी के समान है, जो इसलिये बनाई गई ताकि लोग वाचा को न तोड़ें, और दूसरा भविष्यवाणि के समान, क्योंकि लोग अवश्य ही वाचा को तोड़ेंगे। यह श्राप पहले दिये परम आनन्द के उलटे रूप में शुरू होते हैं, अर्थात् यह कि श्राप भी विस्तार पूर्वक होंगे और जीवन के हर पहलू पर प्रतिदिन

प्रभाव डालेंगे। आगे के वचन इस उलटफेर को विस्तार से बताते हैं, कड़ी पीड़ाओं, और जीविका और जीवन दोनों खोने की तस्वीर सामने रखते हैं। श्राप की चरम् सीमा है आक्रमण करने वाली सेना का देश पर कब्ज़ा, जिसके कारण इस्राएलियों को अपने देश से बाहर निकलना पड़ा। वो भूमि जो लोगों को दी जाने वाली थी उसमें वो अधिक समय तक उनकी न रहेगी, और देश से बाहर निकलकर इस्राएली पलटकर फिर से गुलाम बन जाएंगे।

हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिये कि मूसा, जो मिस्र में अपने लोगों के सताव और गुलामी का गवाह था, अपने लोगों को परमेश्वर से विद्रोह करने के नतीजे के प्रती गम्भीर चेतावनी देने के लिये प्रेरित हुआ होगा। विशेष रूप से यह बात उसके लिये तुरन्त करने की थी क्योंकि वह लोगों के विद्रोही स्वभाव को भली भांती जानता था। लेकिन हमें यह ध्यान में रखना है कि आज के इस्राएली मिस्र छोड़ते समय बच्चे थे, और हो सकता है कि मिस्र के अत्याचार उनको उस तरह याद न थे जैसा मूसा को।

हम इस अध्याय का अन्त २९:१ के साथ करेंगे क्योंकि यदि हम शब्दों के बहाव को देखेंगे, तो लगता है कि वाचा के सभी शब्दों को निष्कर्ष यहाँ निकाला गया है, और व्य.वि.२९:२ से आगे "सारांश और जीवन का चुनाव करने की प्रेरणा" तीसरे उपदेश के भाग जैसा लगता है।

व्य.वि. २९:२–२९ 'वाचा के नवीकरण के उलझन ' सोमवार ४ फरवरी

अध्याय २९ मूसा के आगे के उपदेश से आरम्भ होता है (व्यवस्थाविवरण का तीसरा)। इसमें ऐतिहासिक बातों को फिर से जमा किया गया है, जो आगे चलकर इस्राएलियों का परमेश्वर की वाचा के प्रति वचनबध्दता के अर्थ और उसके मूल बातों पर ध्यान डालता है, विशेष कर उन श्रापों पर अधिक दबाव डालता है जो इस्त्राएलियों के अविश्वास के फलस्वरूप उन्हें मिलता। अध्याय २९ और ३० में, मूसा शक्तिशाली रुप से इस्राएल को वाचा के प्रति वचनबध्द रहने की विनती करता है–कि वे "जीवन का चुनाव करें"।

इस लेख से, सभा के भीतर के मूर्तिपूजक व्यक्तियों से परमेश्वर कैसा व्यवहार करते हैं?

लगातार विद्रोह करते रहने के पाप से सभा को क्या खतरा था?

क्या नए नियम में इसी से मिलते जुलते अनुछेद हैं जो इसी विषय पर बात करते हैं?

अधिक जानकारी

होरेब की वाचा (सीनै पर्वत पर दी गई) और मोआब में दी गई वाचा को अध्याय के आरम्भ में एक साथ जोड़ा गया है। विशेष रुप से व्यवस्थाविवरण की पूरी किताब नई पीढ़ी के लिये वाचा की पुन: स्थापना है। यह इतिहास के उन ४० वर्षों का लेखा देता है जब सीनै पर वाचा दी गई थी। मूसा जब वाचा की शर्तों के कारण उभरे लोगों के उलझनों को देखता है तो वह भी लोगों से पुनर्विचार की व्यक्तिगत प्रार्थना करता है।

परमेश्वर ने कैसे उनका साथ दिया और महान कार्यों द्वारा लोगों को मिस्र से छुड़ाया, निर्जन प्रदेश की यात्रा, आश्चर्यजनक रुप से लोगों की सुरक्षा की और अन्तत: उन्हें विजय दिलाया, इतिहास की इन सब बातों को मूसा फिर से दोहराता है। यह इस बात पर रौशनी डालता है कि अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में परमेश्वर विश्वासी थे, और साथ ही अपने लोगों से हमेशा प्रेम करते और उनकी चिन्ता करते रहे। यह अधिकार जताने वाला एक सामंत नहीं है जो डरा धमका कर कर्तव्य-निष्ठता की मांग कर रहा हो, जैसा अक्सर निकट पूर्वी देशों के राजाधिकार के संधिपत्रों में होता था।

वचन ४ का लेख इस बात की घोषणा करते हैं कि, लोगों के पास देखने को आँखें नहीं हैं, सुनने को कान नहीं है, और समझने को मन नहीं है। शायद यह लोगों के मूल समस्याओं को पहचानना था: परमेश्वर का विद्रोह करने की ओर उनका झुकाव, जैसा इतिहास में बताया गया है (९:४-६ देखो)। यह एक समस्या है जिसे सुलझाने की शक्ति मनुष्य में नहीं है, लेकिन परमेश्वर इसे सुलझा सकते हैं। सिर्फ वही हमें वो कान, आँख और मन दे सकता है जो सही में आज्ञाकारी होंगे। शायद यह घोषणा पुराने नियम और नए नियम की, धार्मिक नवीकरण की ओर संकेत कर रहा है।

वचन १०-१५ में सभा को दिया गया भाषण सभी बातों को अपने अन्दर समेटने के वाचा के स्वभाव को उजागर करता है, जो समाज के किसी विशेष तपके तक सीमित नहीं लेकिन सबके लिये है, जिसमें परदेशी निवासी, नौकर-चाकर और बच्चे भी शामिल हैं। वाचा वर्तमान और भविष्य की दोनों पीढ़ियों को इसमें जोड़ता है, जो वाचा की भूमि में बसेंगे।

लोग मिस्र संसकृती से आए थे और यात्रा के दौरान ऐसे देशों से गुज़रे थे जहाँ मूर्ती पूजा प्रबल थी। आगे के वचनों में दी गई चेतावनियाँ लोगों को इस बात की सम्भावना से सतर्क करते हैं कि गुप्त रुप से लोग मूर्ती पूजा को अपनाने की लालसा में पड़ सकते हैं। उस व्यक्ति विशेष के लिये वहाँ तुरन्त और न पलटा जाने वाला नतीजा भुगतना होगा। और आगे वचन १८-२८ के लेख यदि इस बात की ओर कुछ संकेत करते हैं तो, इस्राएली राष्ट्र आगे चलकर इस अपराध के लिये दोषी ठहरेगा जो उनको विनाश और अनुग्रह या अन्य राष्ट्रों के बीच प्रतिष्ठा के स्थान से नीचे गीराने की ओर ले जाएगा।

व्य.वि. ३०　　'जीवन का चुनाव करो'　　मंगलवार ५ फरवरी

प्राचीन निकट पूर्वी देशों के अनोखे प्रसंगों में, उनके संधिपत्र के आदर्श के अनुसार, व्यवस्थाविवरण इस बात को स्पष्ट करता है कि श्रापों के कारण करारनामा पूरी रीती से समाप्त नहीं होता।

वचन १-२ और आगे के लेख, क्या यह बताते हैं कि श्राप लोगों पर ज़रूर हावी हो जाएगा? यदि हाँ, तो कब?

वचन १-१० पढ़ो। इस्राएल का आज्ञापालन और उन्हें पुन: स्थापित करने के यहोवा के

क्रिया में क्या सम्बन्ध है, आपको क्या लगता है?

"लौटा" लाने पर वचन ३ देखो–परमेश्वर लौटा लाने वाला एजंट है। यिर्मयाह अध्याय २९–३३ भी देखो। लोगों को पुन:स्थपित करने के परमेश्वर के क्रिया का मूल कारण क्या था, आपको क्या लगता है?

लोगों को पुन:स्थापित करने के प्रति किये गए कुछ वादों और घोषणाओं की सूचि बनाओ। एक मसीही होने के नाते जब हम परमेश्वर के पास लौटते हैं तो यह बातें उन निश्चितताओं से कैसे जुड़ते हैं?

अधिक जानकारी

वचन १ में हमारे पास इस बात की भविष्यवाणी और पुष्टि दोनों हैं कि वर्तमान लोगों की आने वाली भविष्य की एक पीढ़ी को देश से बाहर निकलना पड़ेगा। हालांकि पिछले अध्याय में बताए गए श्राप लोगों पर आएंगे, फिर भी कहानी यहाँ समाप्त नहीं होती: कैसे लोगों को वापस लौटाकर उस देश में लाया जाएगा और वे अपने बाप दादाओं से भी बढ़कर समृध्द होंगे, इसके बारे में अचंभित करने वाली प्रतिज्ञाएं बताई गई हैं (देश से निकाले गए लोगों को पुन:स्थापित करने के परमेश्वर के इरादे को देखने के लिये व.५ और यिर्म.३०–३३ भी देखो)।

वचन ६ में मनुष्यों द्वारा जो समस्या सुलझाई नहीं जा सकती उस समस्या को परमेश्वर द्वारा मन का खतना करके सुलझाने का वादा किया जा रहा है (व्य.वि.२९:४ में आँख, मन और कान की कमी), जो लोगों को परमेश्वर से प्रेम करने और उसके पास लौटने में मदद करेगा। यह भविष्यवाणी पुराने नियम के काल में ही पूरी होगी क्योंकि यह लौटना स्पष्ट रूप से निर्भर था नियम के आज्ञापालन के प्रसंग पर (व.१०)। जैसे परमेश्वर ने उनको योग्य बनाया, लोगों को आज्ञापालन करने के चुनाव का अवसर प्रदान किया गया (व्य.वि.१०:१६ और यिर्म.४:४ देखो)। ध्यान दो कि इन अनुछेदों को दो बार पूरा किया गया: जबकि पुराने नियम सारे लोग नहीं लौटे थे, नए नियम में परमेश्वर के सारे लोग सुसमाचार की शक्ति से लौट आए।

वचन ११–१४ लोगों को इस बात की सच्चाई को अपनाने का प्रोत्साहन देता है कि नियम उनके लिये भी उपलब्ध हैं–इसे एबाल पर्वत के पास पत्थरों पर अंकित किया गया, और पढ़ने के लिये उपलब्ध है। यह ज्यादा पेचिदा नहीं है और न ही इसकी भाषा अस्पष्ट है; इसे ढूँढने या इसकी खोज करने की आवश्वक्ता नहीं है, क्योंकि नियम उनके बिलकुल निकट है। यदि लोगों के पास आज्ञाकारी मन है तो, वचनों का पालन करना लोगों के बस की बात है। जैसा व्य.वि. में सलाह दिया गया है, उसी तरह व.१४ एलान करता है कि नियम मन में और मुंह में बने रहें (व्य.वि.६:६–७)। नए नियम के प्रसंग में (रोमियों १०:८–१० देखो) बिलकुल यही शब्द पौलुस द्वारा देखे गए, जो उनके अर्थ का सम्बन्ध यीशु मसीह से जोड़ता है, और इस सच्चाई से कि उस पर विश्वास ही हमें उध्दार दिला सकता है।

एक केन्द्रीय विषय लोगों के सामने रखा गया है कि दो रास्तों में से कोई एक रास्ता वो चुन सकते हैं। एक, आज्ञा न मानकर, जो विनाश, श्राप और मृत्यु की ओर ले जाता है। दूसरा,आज्ञा पालन

के द्वारा, परमेश्वर के आशिष और जीवन की ओर ले जाता है। व्यवस्थाविवरण ११:२६-२८ के अन्त में जहाँ सामान्य नियम समाप्त होते हैं वहाँ दिये गए चुनाव की बात को यह बार-बार दोहराता है। यह एक चुनाव पर आकर थम जाता है, लेकिन एक प्रेम करने वाले और विश्वास योग्य परमेश्वर के व्यक्त किये रूचि और क्रिया, जो इस्राएल के इतिहास के सभी पिढ़ियों तक प्रकट होता रहा, यह एक मेहराबदार प्रेरणा होनी चाहिये जीवन का चुनाव करने में। अन्ततः परमेश्वर की इच्छा यह है कि लोग पूरे मन और आत्मा से उसे अपनाएं (व.२०)।

व्य.वि. ३१ 'अगुवाई में परिवर्तन: मूसा से यहोशू' बुधवार ६ फरवरी

नेबो पर्वत पर मूसा मी मृत्यु के कुछ ही क्षणों पहले किये गए इस उपदेश को उसकी बिदाई के संदेश के रुप में देखा जा सकता है। मूसा ने जब यह कहा कि वह "अब चल फिर नहीं सकता" तब वह १२० वर्ष का हो चुका था। साधारण शारीरिक गतिविधियों से जुड़ा यह एक मुहावरेदार भावना है। मूसा के लिये पूरे सम्मान के साथ, हालांकि वह अगुवाई की गतिविधियों को पूरा नहीं कर पा रहा था, परन्तु अपने उम्र के हिसाब से वह बहुत फुर्तिला था; ऐसा क्यों था?

वचन तीन में हम देखते हैं कि परमेश्वर स्वयं अपने लोगों को यरदन पास वाचा की भूमि में ले चलने में उनकी अगुवाई कर रहे हैं और यहोशू जिसे हाल ही में अगुवा नियुक्त किया गया ऐसा कर रहा है। मानवी अगुवाई और ईश्वरीय अगुवाई हमें कोई बड़ा अन्तर दिखाई नहीं देता। हालांकि परमेश्वर ही असली अक्षुवा और शक्ति है, वह आमतौर पर साहसी लोगों के द्वारा काम करता है।

यरदन पार के अमोरियों पर हाल ही में विजय पाने के बावजूद, आपको क्या लगता है यहाशू को "हियाव बान्ध और दृढ़ हो" एसा क्यों कहा गया, एक प्रेरणा जो मूसा की मृत्यु के बाद बार-बार परमेश्वर और यहोशू १ में के लोग दे रहे थे?

मूसा के नियम लोगों के लिये क्यों लिखे गए, और इसका संरक्षण करने के लिये इसे याजकों को क्यों दिया गया?

गैर सरकारी नए साल की शुरूआत (सीतम्बर/अक्टोबर), में तम्बू के पर्व के समय, मूसा हर सात वर्ष बाद नियमों को सारी इस्राएली प्रजा के साम्हने पढ़कर सुनाता था। यह उस समय से मेल खाता है जब इब्री बन्धुओं को स्वतंत्र किया गया और उनके श्रृण माफ किये गए। इस सच्चाई की रौशनी में कि बहुतेरे लोग अनपढ़ थे और वचनों की व्यक्तिगत प्रती उनके पास नहीं थी, तो सारे लोगों के साम्हने इसे पढ़ना महत्वपूर्ण क्यों था? कितनी बार और कितनी आसानी से आप वचनों को देख पाते हो?

परमेश्वर ने मूसा और यहोशू दोनों को मिलापवाले तम्बू में मिलने के लिये बुलाया ताकि सारे लोगों के साम्हने परमेश्वर के हाथों यहोशू को अगुवाई का काम सौंपा जाए। यह मिलापवाला तम्बू शायद छावनी से दूर मिलने का एक अलग स्थान था, जहाँ मूसा अकेला परमेश्वर की उपस्थीती में परमेश्वर से मिलता था ताकि उनकी इच्छा को जान सके (निर्ग.३३:७-११)।

(कुछ अनुवादों में "मिलापवाला तम्बू" का उपयोग किया गया हो लेकिन इसे वह पवित्र तम्बू समझने की गलती न करना जिसमें सिर्फ याजक और नियुक्त किये गए लेवी ही प्रवेश कर सकते थे) यह प्राधिकार परमेश्वर की ओर से अगुवाई का एक विभूषण था: यह एक ईश्वरीय आशिष था बादल के खम्भे ने उस पर ठहरकर इस बात की पुष्टि सारे सभा के साम्हने की।

इसी के समानन्तर अनुछेद (गिन.२७:१६-२०), सारे लोगों के साम्हने परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और यहोशू के सर पर हाथ रखकर उसे कार्यभार सौंपने को कहा। क्या यह दो अलग-अलग कार्यभार थे या एक ही समान? यहाँ मूसा से अगुवाई यहोशू को दी गर्ल। ईश्वरीय और मानवी गवाही की आवश्यक्ता थी ताकि लोग यहोशू पर विश्वास कर सकें।

सम्मान सहित नए नियम के "यहोशू" (याने यीशु) को, किन गवाहियों को प्रमाणित करना पड़ा यह बताने के लिये कि वह कौन है (यूहन्ना ५)?

परमेश्वर ने इस बात को भांप लिया कि मूसा के बाद लोग प्रभु के प्रति अविश्वासी हो जाएंगे और उसके क्रोध का पात्र बनेंगे। अध्याय ३२ का गीत एक गवाही के रूप में लोगों को इस बात की याद दिलाने के लिये लिखा गया। इस्राएल के इतिहास में कई बार परमेश्वर ने अपने लोगों को लौटकर उसके और उसकी वाचा के पास आने को कहा (व्य.वि. ११:२६; ३०:१९; यहेज.१८:२३,३०)। भविष्य को देखने की परमेश्वर की योग्यता क्या हमारे स्वतंत्र चुनावों पर असर करती है?

जब आप एक कहानी की किताब पढ़ते हो तो कहानी के अन्त में क्या होता है यह जानने के लिये पहले उस कहानी के अन्त को पढ़ने का लालच करते हो। यदि पढ़ने वाले को यह पता भी चल जाए कि अन्त में क्या होता है तो भी क्या वह कहानी के घटनाओं के वर्णन में कोई बदलाव कर सकता है? परमेश्वर हमारे आकाशमण्डल और समय के परे हैं; हमारा भूतकाल, वर्तमान और भविष्य परमेश्वर का अनन्त वर्तमान है (लूका २०:३८ देखो)।

मूसा की वाचा के बाहर कई प्राचीन वाचाओं की संधी में गवाह बहुत महत्वपूर्ण माने जाते थे। आमतौर पर अन्य जाति के सामंती राजाधिराज और दास दोनों के आकाश और पृथ्वी के देवता वाचा के प्रबन्ध के गवाह हुआ करते थे। क्योंकि परमेश्वर स्वयं राजाधिराज हैं इसलिये उनकी सारी सृष्टि को गवाह बनाया जाता। इस अध्याय में और किन गवाहों के बारे में लिखा है?

अक्षर आपको यह पता होता कि आपका सारा जीवन CCTV द्वारा सारे मसीही और गैर-मसीही लोगों के साम्हने रेकॉर्ड किया जा रहा है तो, क्या आपके जीने के तरीके पर इसका असर पड़ता? परमेश्वर की आत्मा और उसके वचनों की गवाही इससे कहीं अधिक मूल्यवान है। वह पाप, धार्मिकता और न्याय की गवाही देता है (यूहन्ना १६:८)।

व्य.वि. ३१:३०–३३:२९ 'गवाही का गीत और अन्तिम आशिष' गुरूवार ७ फरवरी

मूसा का गीत भविष्यवाणीय और कविता दोनों था, जो व्यवस्थाविवरण के केन्द्रीय विषय को दर्शाता है: इस्राएलियों का स्वधर्म त्याग परमेश्वर के न्याय का कारण था।

परमेश्वर स्वयं को एक चट्टान कहता है, एक रूप जो पुराने नियम में कई बार दिखाई देता है। यीशु इस रुपान्तरण का हवाला कलीसिया के नींव के रूप में स्वयं के लिये बताते हैं (मत्ति १६:१८)। यह शब्द परमेश्वर की स्थीरता और अनन्तता का प्रतीक है। यह इस्त्राएल के अस्थिर और लगातार बदलने वाले स्वभाव के बिलकुल विपरीत है। और, रेगिस्तान में चट्टान तत्वों और दुश्मनों से रक्षा का एक साधन था, और वैसे भी रूपान्तरण दोहरा काम करता है।

परमेश्वर का वर्णन वाचा की भूमि में बसे इस्त्राएलियों का पालन पोषण करने वाले के रूप में किया जाता है। इस गीत में भविष्य का यर्थात् चित्रण है। यशूरून इस्त्राएल का उपनाम है जिसका अर्थ है "धार्मिक"। इस्त्राएल ने जघन्यता से मूर्तीपूजा में पड़कर वाचा की वचनबध्दता को तोड़ाकर कैसे परमेश्वर के क्रोध को भड़काया, इस बात का वर्णन परमेश्वर बड़े ही व्यंग्यपूर्ण रूप से करते हैं।

किये गए पापों का न्याय श्राप के रुप में (व्य.वि.२८)करने की प्रतिज्ञा परमेश्वर करते हैं। जब परमेश्वर इस्त्राएल का न्याय करते हैं तब गवाही के गीत में क्या होता है क्या आपने इस बात को देखा (३२:१९–२५)? झूठे देवता कितने गुणहीन हैं यह बताने के बाद, वह उन्हें याद दिलाता है कि केवल एक ही परमेश्वर है और कोई नहीं (३२:३९) जिसके पास जीवन देने और लेने की शक्ति है।

मूसा ने इस्त्राएल को इस गीत के शब्दों को जीवन–मृत्यु की बात मानकर चलने की चेतावनी दी (३२:४७)। क्या पवित्र शास्त्र आपके लिये दिलचस्प कहानियों की एक किताब है, या फिर जीवन–मरण की बात है?

जब मूसा को अबारिम की पहाड़ियों (जिसका एक शिखर नेबो पर्वत था) पर बुलाया गया, तब वहाँ उसने इस्त्राएल के सभी कुलों को बिदाई का आशिष दिया। जब परमेश्वर सभी कुलों को एक भाग, इस्त्राएल मानते हैं तो हर कुल के लिये अलग–अलग आशिष क्यों? इसकी तुलना उत्पत्ति २७ और ४९ के परीवार के वरिष्ठ सम्बन्धी विधी जहाँ मृत्युशैया पर लेटे पिता की इच्छा/आशिष से कैसे कि जा सकती है?

इस बिदाई के भाषण का एक केन्द्रिय विषय है परमेश्वर की महीमा। उपदेश की शुरुआत प्रभु अपने लोगों के पास सीनै, पारान और सेईर पर्वत से आ रहे हैं इस वर्णन के साथ होता है। यह वास्तविक पर्वत रेगिस्तान में इस्त्राएल बिताए अनेक वर्षों में दिये गए वाचा के साथ जुड़े हैं। "पवित्र लोग" या "संत" शायद स्वर्गदूत थे जो सीनै पर्वत पर जब मूसा को मध्यस्त के रूप में नियम दिये जा रहे थे तब परमेश्वर के सहायक के रूप में परमेश्वर के साथ थे (प्ररितों ७:५३; गला.३:१९; इब्रा.२:२)। "यशूरून का राजा", परमेश्वर के गौरव को दर्शाता है जो अनोखा है

और इस्राएल का रक्षक और प्रबन्धक है (३३:५, २६-२७)।

मूसा ने प्रार्थना की कि, रूबेन न मरे और यहूदा शक्तिशाली रूप से देश की अगुवाई करे, विशेष कर युध्द में, परमेश्वर की सहायता द्वारा। उसने यह प्रार्थना भी की कि लेवियों को जिस काम के लिये परमेश्वर ने चुना था वो काम वे करते रहें और साथ ही लोगों को परमेश्वर के नियम और व्यवस्था सिखाते रहें। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि सदियों बाद ज्ञान की कमी के कारण लोग नाश किये गए (होशे ४:६), जिसके जिम्मेदार किसी हद तक लेवी और याजक भी थे। बिन्यामिन के लिये मूसा की प्रार्थना थी कि वह सुरक्षितता और शान्ति से रहे, और मनश्शे और एप्रैम के लिये यह बिनती की कि वो समृध्द रहें और बड़ी सेना की शक्ति उनके पास हो। मूसा ने प्रार्थना की कि जबूलून और इस्साकार समुद्री व्यापार से धनी बनें।

इस्राएल को आशिष मिलना था क्योंकि वे परमेश्वर ने उन्हें बचाया था, इस्राएल का सहायक (३३:२९)। क्या आपको लगता है कि इस्राएली अपने को आशिषित और बचाए गए महसूस कर रहे थे? वे शंका क्यों कर रहे थे?

एक मसीही होने के नाते क्या आप हमेशा आशिषित और बचाए गए महसूस करते हो? आपके जीवन की कौनसी बातें आपकी भावनाओं को नियंत्रित करते हैं? किस प्रकार आप इस्राएल के समान हो?

व्य.वि. ३४ 'नाटक का उपसंहार: मूसा की मृत्यु' शुक्रवार ८ फरवरी

यह आखिरी अध्याय क्यों लिखा गया है, आपकी राय क्या है? नियम की कीताब का अन्त कहाँ होता है?

मूसा शायद समुद्र तल से ३३०० फीट की ऊंचाई (नेबो पर्वत की चोटी) पर खड़ा होकर वहाँ से वाचा की सारी भूमि के विस्तृत दृश्य को देख रहा था। कल्पना करो कि आप आसमान को छूती हुई इमारतों के ऊपर खड़े हो। अपनी मृत्यु से पहले सिर्फ उस भूमि की एक झलक देखने को इस १२० वर्ष के शक्तिशाली व्यक्ति को इतने ऊंचे पर्वत पर चढ़ना पड़ा!

परमेश्वर के लोगों के प्रवेश के लिये वाचा की भूमि का उपहार मूसा के लिये सिर्फ देखने का उपहार था। मूसा ने लोगों की अगुवाई करने में अपनी शक्ति, समय और यहाँ तक कि जीवन का बलिदान भी दिया। लेकिन मूसा को उस भूमि में प्रवेश करने की अनुमती न मिली क्योंकि उसने मरीबा कादेश (गिन.२०:१-१३) में परमेश्वर का अपमान किया। क्या आपको लगता है कि यह बड़ी कठोरता की बात थी?

इस्त्राएल के कुड़कुड़ाने के पाप के कारण मूसा पाप में गिरा। लोगों की ज़रूरतों को किसने पूरा किया-मूसा या परमेश्वर ने? मूसा ने स्वयं पर भरोसा या स्वाभिमान करके परमेश्वर का अपमान किया: "क्या हम को (मूसा और हारून) इस चट्टान से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा?" (गिन.२०:१०)। रेगिस्तान में बिताए ४० वर्ष के अन्तिम समय में यह हुआ। इस बात के लिये परमेश्वर मूसा (और हारून) से नाराज़ थे, लेकिन मूसा ने लोगों पर दोष लगाया (व्य.वि.१:३७;

३:२६)। क्या आपको लगता है कि मूसा कडुवाहट से भरा था? क्या आपको लगता है कि बुढ़ापे के कारण मूसा की मृत्यु हुई?

हम आसानी से यह देख सकते हैं कि जिस राष्ट्र की मूसा ने अगुवाई की उसी राष्ट्र के पापों के कारण उसे दु:ख उठाना पड़ा। उसकी यह इस बात कुछ हद्द तक यीशु के जीवन की छवी बताती है, एक पिड़ित सेवक। एक अगुवे के बाद दूसरे अगुवे का आना, इसके लिये धार्मिक बुध्दिमानी का होना आवश्यक था। अपने काम की शुरूआत में (गिन.२७:१८; व्य.वि.३१:१४-१५), इस उपहार से विभूषित यहोशू शायद अब पूरे विश्वास के साथ प्रभु के प्रति वचनबध्द था। यह यहोशू भी यीशु की तरह है, जिसका अभिषेक बुध्दि और समझ की आत्मा से किया गया था (यशा.११:२), और जो अपने लोगों को धार्मिक वाचा की भूमि, स्वर्ग में ले जाकर बचाता है। वहाँ उसके लोग सुरक्षित रहेंगे (यिर्म.२३:६ देखो)। याद रहे कि यहोशू (इब्री में) और यीशु (युनानी में एक जैसे नाम) का अर्थ है "प्रभु बचाता है"। धार्मिक अनुरूपता पर ध्यान दो: मूसा (नियम का प्रतीक) परमेश्वर के लोगों को वाचा की भूमि (स्वर्ग) में न ला सका; सिर्फ यहोशू (यीशु) यह कर पाया।

क्या मूसा की तरह और कोई नबी न हुआ? मानवी रूप से नबी, नहीं। लेकिन व्य.वि. १८:१५ के अनुसार कौनसा नबी मूसा के बाद आएगा और जो मूसा की तरह होगा? वह यहूदी होगा। वह एक मध्यस्ती करने वाला और वाचा का देने वाला होगा। परमेश्वर के कहे शब्दों को प्रमाणित करने के लिये वह मूसा के समान चमत्कार और आश्चर्यकर्म करेगा। वह यीशु होगा!

निषकर्ष

यह व्यवस्थाविवरण पढ़ने का आपका पहला और आखिरी बार न हो। आशा है कि शान्त समय श्रृंखला से आपको लेख को बेहतर रूप से देखने में मदद मिली। स्वभाविक है कि इससे आपके अपने कई प्रश्न सामने आए होंगे। यदि इस श्रृंखला के सभी भागों को पढ़ने का आपको मौका न मिला हो तो चिन्ता मत करो। मुख्य मकसद इन वचनों को पढ़ना है। व्यवस्थाविवरण की इस श्रृंखला को समाप्त करने से पहले या बाद में समय निकालकर आपने क्या सीखा इस पर फिर से एक नज़र डालो विशेष कर इन विषयों पर: सुसमाचार, परमेश्वर का सामर्थ, छुटकारा, अनुग्रह, प्रेम, आज्ञापालन, न्याय, अपक्षपात और अगुवाई।
बेझिझक होकर अपने विचार, आलोचना और प्रश्न ईमेल द्वारा भेजो:
<cocmumbai@rediffmail.com>.